सांध्य दैनिक
4PM
जिद...सच की
www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_SanjayS YouTube @4pm NEWS NETWORK
● वर्ष: 11 ● अंक: 29 ● पृष्ठ: 8 ● लखनऊ, शनिवार, 1 मार्च, 2025
मूल्य ₹ 3/-

हजार छूरों की तुलना में चार विरोधी अखबारों से अधिक डरना चाहिए।
-नेपोलियन बोनापार्ट

बारिश की भेंट चढ़ा मैच, ऑस्ट्रेलिया... 7 | मणिपुर में सामाजिक व सियासी... 3 | महाकुंभ की कमाई से मृतकों के... 2

महाराष्ट्र के गृह राज्य मंत्री के बयान पर कोहराम

पुणे रेपकांड पर की शर्मनाक टिप्पणी

» महायुति सरकार की पूरे देश में थू-थू

» योगेश कदम के बयान से लग रहा है आरोपी के साथ खड़ी है सरकार!

» गृह राज्य मंत्री ने बोला शांतिपूर्वक तरीके से हुआ रेप

□□□ 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। फास्ट ट्रैक आदलातें, सख्त कानून और फांसी की सजा। देश में बलात्कार को रोकने के लिए वह सबकुछ किया गया जो संभव के दायरे में आता है। लेकिन न तो सूरत बदली और न ही मानसिकता। बस फर्क सिर्फ इतना आया कि दिल्ली में बालत्कार चलती बस में हुआ था और महाराष्ट्र में खड़ी बस में एक युवती के साथ बालत्कार किया गया।

यही नहीं इंसानियत को तार-तार कर देने वाले महाराष्ट्र के गृह राज्य मंत्री योगेश कदम का बयान ने पूरे देश में तूफान मचा दिया है। कदम ने कहा है कि रेप शांतीपूर्वक तरीके से हुआ है लड़की ने शोर क्यों नहीं मचाया। उनके इस बयान पर विपक्ष हमलावर है और जनता उनके बयान की भर्तस्ना कर रही है। कांग्रेस ने फडणवीस सरकार से तुरंत गृह राज्यमंत्री को बाहर करने की अपील की है।

अब क्या करेंगे सीएम फडणवीस

असंवेदनशील बयान पर बीजेपी चुप क्यों?

बड़ा सवाल यहीं है कि यदि इस तरह का बयान किसी गैर भाजपाई राजनीतिक दल के किसी सदस्य ने दिया होता तो क्या होता? बीजेपी आज भी मुलायम सिंह यादव के लड़कों से गलती हो जाती है वाले बयान को लेकर तरह–तरह के व्यंग कसती है। अभी कुछ दिन पहले ही यूपी के डिप्टी सीएम बृजेश पाठक ने भी इस बयान को याद दिलाया था तो सदन में काफी हंगामा हो गया था। ऐसे में यदि इस संवेदनशील मुद्दे पर सरकार के शीर्ष पद पर बैठा व्यक्ति असंवेदनशील बयान जारी करता है तो फिर उसके क्या मायने होंगे।

आरोपी के साथ है सरकार : सपकाल

महाराष्ट्र कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष हर्षवर्धन सपकाल ने बयान पर कड़ा विरोध जताया है। हर्षवर्धन सपकाल ने कहा है कि जब कोई पीड़िता खराब समय से गुजरती है तो उसकी प्रतिक्रिया क्या होनी चाहिए, इसकी परिकल्पना करना भी समझ से परे है। गृह राज्य मंत्री का जिस तरह का बयान है, ऐसे लोगों को सार्वजनिक रूप से ही संन्यास ले लेना चाहिए। वह क्या बोल रहे हैं, उन्हें समझ नहीं आ रहा है। वह पीड़िता के साथ हैं या फिर आरोपी के साथ? मैं समझता हूं कि इस तरह के बयान नहीं होने चाहिए। उन्होंने कहा कि महाराष्ट्र की महायुति सरकार दो वर्गों, दो धर्मों में लड़ाई लड़वाना चाहती है। जो भी घटनाएं हो रही हैं, वह सरकार की विफलता को दर्शाती हैं।

नेताओं से लेकर कानूनविदों ने की आलोचना

पुणे घटना को लेकर नेताओं से लेकर पूर्व न्यायाधीश तक ने आलोचना की है। पूर्व सीजेआई डीवाई चंद्रचूड़ ने कहा कि निर्भया घटना के बाद कानूनों में बहुत सारे बदलाव किए गए, हालांकि, हम केवल कानून बनाकर ऐसी घटना को नहीं रोक सकते। चंद्रचूड़ ने कहा कि समाज पर बड़ी जिम्मेदारी है और इसके अलावा कानूनों का क्रियान्वयन भी होना चाहिए। उन्होंने कहा कि महिलाओं के लिए बने कानूनों को सही ढंग से लागू किया जाना चाहिए। महिलाएं जहां भी जाएं उन्हें सुरक्षित महसूस करना चाहिए। वहीं संजय राउत ने कहा कि अगर राज्य में विपक्षी गठबंधन महा विकास आघाडी की सरकार होती तो भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की महिला नेता अब तक राज्य मुख्यालय मंत्रालय के बाहर हंगामा कर रही होतीं। राउत ने महिलाओं के लिए वित्तीय सहायता की भाजपा नीत सरकार की लाडकी बहिन योजना का जिक्र करते हुए पूछा, हर महीने 1,500 रुपये देकर क्या आपने महिलाओं का आत्मसम्मान खरीद लिया है?

सरकार के घटक दलों ने मांगी है फांसी की सजा

यह बात सही है कि सरकार में साथ दे रहे शिव सेना और अजीत पवार दोनों ने ही घटना की निंदा की है और आरोपी को फांसी देने की मांग की है। ऐसे में बीजेपी सरकार में मंत्री योगेश कदम ने क्या यह बयान वोट बैंक पालिटिक्स के तहत दिया है यह समझना जरूरी होगा। महाराष्ट्र पुलिस ने जनता के सहयोग से रेपेस्टि को गिरफ्तार करने में सफलता पाई।

नहीं बदली सूरत

दिल्ली के निर्भया रेप कांड के बाद देश में रेप को लेकर सख्त कानून बने। लोगों को लगा कि कानून बनने से और दंड मिलने से अपराधियों के मन में भय व्याप्त होगा और रेप होना कम होंगे। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। रेप की घटनाओं में कमी नहीं आयी। दिल्ली से मिलता जुलता कांड महाराष्ट्र में हो गया । वहां खड़ी बस में युवति के साथ रेप कर दिया गया। रेप के बाद जिस तरह की कार्रवाई दिल्ली में हुई थी उस तरह की कर्रवाई महाराष्ट्र में देखने को नहीं मिली। बड़ा सवाल यही है कि आखिर गृह राज्य मंत्री को रेप को जस्टीफाई करने की क्या जरूरत थी। अगर उनकी जुबान फिसली है तो फिर आलाकामन ने उस पर क्या कार्रवाई की।

शिवसेना–बीजेपी में बढ़ेगी तकरार!

महाराष्ट्र में मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस और उप-मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे के बीच सियासी तकरार बढ़ने के आसार दिख रहे हैं. शिंदे सरकार के दौरान स्वास्थ्य विभाग के 3,200 करोड़ रुपये के काम को देवेंद्र फडणवीस ने स्थगित कर दिया है। तानाजी सावंत पर बिना किसी कार्य अनुभव के कंपनी को मैकेनिकल सफाई का ठेका देने का आरोप लगा है। मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने शिंदे सरकार के दौरान की कथित अनियमितताओं के खिलाफ कार्रवाई शुरू कर दी है, शिंदे सरकार के कई फैसले स्थगित कर दिए गए, वहीं कुछ को रद्द भी कर दिया गया. तानाजी सावंत शिंदे सरकार के दौरान स्वास्थ्य मंत्री थे। उनके कार्यकाल के दौरान अधिकारियों के तबादलों और एम्बुलेंस खरीद सहित हजारों करोड़ रुपये के घोटाले होने की बात सामने आ रही है। स्वास्थ्य विभाग के अधीन सभी सरकारी अस्पतालों, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों और उपकेंद्रों की सफाई का कार्य आउटसोर्सिंग से कराने पर सहमति बनी. इसके लिए 30 अगस्त 2024 को पुणे की एक निजी कंपनी को सालाना 638 करोड़ रुपये और 3 साल के लिए कुल 3,190 करोड़ रुपये का ठेका दिया गया। सीएम फडणवीस ने मंत्रियों के ओएसडी और निजी सचिव के मामले में भी सख्त रुख अपनाया है। मंत्रियों के ओएसडी और सचिव की नियुक्त के लिए 125 नाम भेजे गए थे, जिसमें सीएम ने 109 नामों को मंजूरी दी है जबकि 16 नामों को रोक दिया है उन्होंने साफ तौर पर कहा था कि वह किसी दलाल को यह जिम्मेदारी नहीं देंगे। इन नामों में कुछ ऐसे नाम है जिनके सुझाव को एकनाथ शिंदे की शिवसेना की ओर से भी गए थे। इस फैसले की उद्धव ठाकरे गुट ने भी तारीफ की थी। शिवसेना यूबीटी ने कहा था कि फडणवीस राज्य के शासन में अनुशासन लाने के लिए मजबूत कदम उठा रहे हैं। सीएम फडणवीस ने भ्रष्टाचार के नाले की सफाई शुरू कर दी है।

महाकुंभ की कमाई से मृतकों के परिजनों को मुआवजा दिया जाए : अखिलेश यादव

» सपा प्रमुख बोले- सम्राट हर्षवर्धन से प्रेरणा लें सीएम

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। राजधानी लखनऊ में सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा है कि सरकार का दावा है कि महाकुंभ से प्रदेश की अर्थव्यवस्था में कई लाख करोड़ रुपये की कमाई हुई है। ऐसे में अर्जित धन से ही सरकार मृतकों के परिजनों को मुआवजा और घायलों के इलाज का प्रबंध करे। इसमें से कुछ रुपये लापता लोगों को खोजने और घर पहुंचाने के लिए बचाकर रख लेना चाहिए।

अखिलेश ने कहा कि इस अकूत कमाई में से ही उन दुकानदारों के घाटे की पूर्ति की जाए, जिन्होंने उत्तर प्रदेश सरकार की बदइंतजामी की वजह से मेले में दुकान लगाकर घाटा उठाया है। इसमें से कुछ रकम सभी मेला कर्मियों को होली के बोनस के रूप में देने की घोषणा करनी चाहिए। सपा अध्यक्ष ने कहा कि मुख्यमंत्री को महादानी सम्राट हर्षवर्धन से प्रेरणा लेते हुए अधिकांश धन प्रयागराज के इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए दान कर देना चाहिए। लाखों-करोड़ों की इस राशि में से कुछ पैसा सत्य बोलने की प्रेरणा देने वाले और नैतिकता सिखाने वाले किसी आत्मसुधार के सत्यनिष्ठ संस्थान के निर्माण के लिए देना चाहिए।

विपक्ष ने कुंभ आयोजन के दौरान अपनी सकारात्मक भूमिका निभाई

अखिलेश ने कहा कि विपक्ष ने कुंभ आयोजन के दौरान अपनी सकारात्मक भूमिका को निभाते हुए सरकार की कमियों को उजागर किया। उन पर सकारात्मक सुझाव देने का काम किया। अगर विपक्ष के उठाए सवालों पर समय रहते कार्रवाई की गई होती तो महाकुंभ में भगदड़ न होती।

बजट के जरिए सरकार जनता को गुमराह कर रही : शिवपाल

राजधानी लखनऊ में विधानसभा में बजट पर चर्चा के दौरान को सपा के राष्ट्रीय महासचिव शिवपाल सिंह यादव ने जमकर शेरो-शायरी की। उन्होंने शेर के जरिए सरकार पर हमला किया तो दूसरे शेर के जरिए पार्टी मुखिया अखिलेश यादव की तारीफ करते हुए पार्टी के नेताओं को पैगाम भी दिया। शिवपाल ने कहा कि बजट के जरिए सरकार जनता को गुमराह कर रही है। उन्होंने बजट पेश करने के दौरान वित्त मंत्री द्वारा पढ़े गए शेर का जवाब कुछ इस अंदाज में दिया। खुद को आसमान में उड़ता हुआ बाज समझ रहे हैं, हकीकत यह है जमीं पर जनता बदहाली से कराह रही है। आपकी निगाहें सूरज के ठिकानों तक होगी, पर क्या यह बताने की जहमत उठाएंगे कि देश का किसान कब तक सूखे खेतों को ताकता रहेगा। युवा कब तक बेरोजगारी की तपती धूप में तपते रहेंगे। विपक्ष ने इस शेर का मेज थपथपा कर स्वागत किया। उन्होंने आउटसोर्सिंग में 14500 की जगह सिर्फ 8500 मानदेय देने, बिजली बिल में लाइनमैन द्वारा गलत तरीके से वसूली करने, जीएसटी के जरिए मजदूरी करने वालों से भी टैक्स लेने की बात कही। उन्होंने प्रदेश में चल रही सिंचाई परियोजनाओं को जल्द से जल्द पूरा करने की मांग की।

अंधेरों की सरकार अब जाने वाली है...

सरकार पर विभिन्न परियोजनाओं की अनदेखी का आरोप लगाते हुए कहा, अंधेरों की सरकार अब जाने वाली है, जनता की हुंकार अब आने वाली है। झूठ के महल अब ज्यादा दिन नहीं टिकेंगे, नेताजी के सिपाही अब फिर से लड़ेंगे। हर खेत को पानी, हर हाथ को काम, यही है समाजवादियों का पैगाम। अखिलेश है उम्मीद, अखिलेश है शान, 2027 में फिर होगा उनका नाम।

सफाईकर्मियों के साथ न्याय करे सरकार

यूपी विधानसभा का बजट सत्र जारी है। सदन में विपक्ष ने अलग-अलग मुद्दों पर सवाल उठाए जिनका यूपी सरकार के मंत्रियों ने जवाब दिया। समाजवादी पार्टी के विधायक अतुल प्रधान सदन की कार्यवाही में शामिल होने के लिए झाड़ू और डॉ. आंबेडकर की तस्वीर लेकर पहुंचे। इस दौरान उन्होंने सरकार से सफाई कर्मचारियों की समस्याओं को हल करने की अपील की है। उन्होंने विधान भवन में स्थित चौधरी चरण सिंह की प्रतिमा के पास प्रदर्शन किया। उन्होंने कहा कि ये सरकार झूठ फैलाने का काम कर रही है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रयागराज में महाकुंभ समाप्त होने के बाद साफ-सफाई की और सफाईकर्मियों के साथ भोजन किया। इसके पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सफाईकर्मियों के पैर धुले थे लेकिन इससे उनकी समस्याओं का समाधान नहीं होगा। उन्होंने कहा कि सरकार को सफाईकर्मियों के साथ न्याय करना चाहिए और नगर पालिका, नगर पंचायत और अलग-अलग विभागों में खाली पड़े सफाईकर्मियों के पदों को भरना चाहिए। सफाईकर्मियों को सरकारी नौकरी दी जानी चाहिए। वहीं, तदर्थ शिक्षकों को वेतन न देने और उनके नियमितीकरण के मुद्दे पर सदस्यों ने मंत्री गुलाब देवी को घेरा।

रालोद ने सपा पर लगाया हिंदी विरोध का आरोप

» राहुल गांधी-अखिलेश से मांगा जवाब, विधान परिषद स्थगित

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। यूपी में विधानमंडल सत्र के दौरान रालोद ने सपा पर हिंदी भाषा का विरोध करने का आरोप लगाया है। रालोद नेताओं ने मामले पर राहुल गांधी व अखिलेश यादव से जवाब की मांग की है। यूपी विधानसभा सत्र के दौरान शुक्रवार को राष्ट्रीय लोकदल के विधायकों ने सपा व कांग्रेस पर हिंदी भाषा का विरोध करने का आरोप लगाया और उन्होंने कहा कि सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव और कांग्रेस नेता राहुल गांधी को इस पर जवाब देना चाहिए।

वहीं, विधान परिषद की कार्यवाही को तीन बजे तक के लिए स्थगित कर दिया गया है। यूपी सरकार के मंत्री अनिल कुमार ने अपने एक्स अकाउंट पर लिखा कि राष्ट्रीय लोकदल ने तमिलनाडु (डीएमके) के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति को लागू करने को लेकर हिंदी विरोध के खिलाफ आवाज उठाई! लेकिन क्यों चुप है इंडी गठबंधन के बड़े साथी राहुल गांधी और अखिलेश यादव,अपनी स्थिति स्पष्ट करे। उत्तर प्रदेश की 24 करोड़ हिंदी भाषी जनता से अपील अपनी भाषा, संस्कृति और सम्मान के लिए हमारे साथ आएं।

दिल्ली से भगाई आपदा अब पंजाब पर मंडरा रही : जाखड़

» मनीष पंजाब में सिसोदिया बना रहे शराब नीति, सीएम मान की नींद उड़ी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चंडीगढ़ । पंजाब भाजपा अध्यक्ष सुनील जाखड़ ने आम आदमी पार्टी पर बड़ा निशाना साधा है। अपने एक्स पर एक वीडियो शेयर कर जाखड़ ने कहा कि दिल्ली से भगाई आपदा अब पंजाब पर मंडरा रही है।

बीते कुछ दिनों से जिस प्रकार दिल्ली के पूर्व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया पंजाब में बने हुए हैं उससे मुख्यमंत्री भगवंत मान को नींद तक नहीं आ रही है और उनका ब्लड प्रेशर भी बढ़ा हुआ है। जाखड़ ने कहा कि उन्हें जानकारी मिली है कि पंजाब की नई शराब नीति मनीष सिसोदिया तैयार कर रहे हैं, इस नई शराब नीति पर आज कैबिनेट की बैठक में ड्राफ्ट पर चर्चा हुई है और इसे लगभग फाइनल कर दिया गया है। जाखड़ ने कहा कि उन्हें अब सीएम मान और वित्त मंत्री हरपाल सिंह चीमा की चिंता है। क्योंकि दिल्ली में जो शराब नीति बनाई गई थी, उसी के तर्ज पर अब पंजाब में नई शराब नीति बनाई जा रही है।

सांसद चंद्रशेखर आजाद व सपा के राष्ट्रीय सचिव में तनातनी

» भरी सभा में छात्र नेता और सपा के राष्ट्रीय सचिव ने सुनाई खरी खोटी, हुआ हंगामा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

अलीगढ़। शिक्षा का केंद्र अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय अब राजनीति का अखाड़ा बनता हुआ नजर आ रहा है, यही कारण है कि यहां राजनीति के धुरंधर लगातार शिरकत करते हुए नजर आ रहे हैं। आज अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में चंद्रशेखर आजाद पहुंचे तो मामला गर्मा गया।

उसकी वजह रही वह बयान जो आज से 5 साल पहले एक मीडिया इंटरव्यू के दौरान चंद्रशेखर आजाद के द्वारा दिया गया था जिसमें उनके द्वारा कहा गया था. अब हम श्री राम मंदिर बनवाने जा रहे हैं, यह बयान सोशल मीडिया पर चर्चाओं का केंद्र था. जिसको लेकर अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के छात्र नेता इंजमाम उल हक के द्वारा यह बयान चलाने के बाद चंद्रशेखर आजाद से भारी महफिल में सवाल कर दिया। इस दौरान आयोजकों के द्वारा धक्का मुक्की करते हुए छात्र नेता को कार्यक्रम स्थल से बाहर निकाला गया, जिसके बाद छात्र आक्रोशित हो उठे। आयोजकों के द्वारा कहा गया यह बयान पूरी दुनिया से पूछा जा सकता है चंद्रशेखर आजाद से क्यों? दरअसल पूरा मामला जिला अलीगढ़ के अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के स्टाफ क्लब का है, जहां अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के टीचिंग स्टाफ के द्वारा चंद्रशेखर आजाद नगीना संसद को विशेष तौर पर आमंत्रित किया था। जिसके बाद धीरे-धीरे भीड़ इतनी बढ़ गई कि स्टाफ क्लब में भीड़ का ठिकाना नहीं रहा। इस दौरान छात्र नेता समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय सचिव इंजमाम मौके पर पहुंच गए।

विधान परिषद में गूंजा शिक्षक तबादला मामला

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। राजधानी लखनऊ स्थित विधान परिषद में सहायता प्राप्त महाविद्यालयों में ट्रांसफर के लिए आए 88 आवेदनों में से सिर्फ चार शिक्षकों के तबादलों पर सवाल उठे। भाजपा के ही देवेंद्र प्रताप सिंह ने प्रश्न प्रहर में कहा कि सिर्फ इतना बता दिया जाए कि शेष मामलों में कब तक निर्णय ले लिया जाएगा। इस पर उच्च शिक्षा मंत्री ने कहा कि स्थानांतरण नियमावली 2024 जारी की गई थी। सभी आवेदन एकल ट्रांसफर के लिए हैं, कोई भी आवेदन पारस्परिक स्थानांतरण के लिए नहीं है। छात्र हित में बीच सत्र में तबादले नहीं किए गए।

अगले एक माह में परीक्षण पूरा हो जाएगा, जो उचित होगा, निर्णय ले लिया जाएगा। प्रश्न प्रहर में ही ध्रुव कुमार त्रिपाठी ने एडेड महाविद्यालयों में 80 वर्ष से अधिक उम्र के पेंशनरों की अतिरिक्त पेंशन का मामला उठाया। उच्च शिक्षा मंत्री ने कहा कि शासनादेश का परीक्षण कराकर उसके मंतव्य का एक माह के भीतर पालन करा देंगे। त्रिपाठी ने एक ट्रांसफर के मामले में उच्च शिक्षा मंत्री के सदन में सही जानकारी न देने का मामला उठाया। इस पर मंत्री ने खेद प्रकट करते हुए संबंधित अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई का आश्वासन दिया। सपा के डॉ. मान सिंह यादव ने नमामि गंगे विभाग में कोविड के दौरान मृत कार्मिकों के आश्रितों को नौकरी न देने का मुद्दा उठाया।

उद्धव ठाकरे भी नीरो की तरह हैं : एकनाथ शिंदे

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने शिवसेना (उबाठा) प्रमुख उद्धव ठाकरे पर कटाक्ष करते हुए उनकी तुलना 'नीरो से की, जो रोम के जलते समय बांसुरी बजाता रहा।'पुणे जिले के जुन्नार में पार्टी की 'धन्यवाद रैली' में शिंदे ने कहा कि वह मुंह में चांदी का चम्मच लेकर पैदा नहीं हुए हैं, बल्कि उनका जन्म आम लोगों के जीवन में सुनहरे दिन लाने के लिए हुआ है।

शिंदे ने कहा कि वह आम नागरिक को 'सुपरमैन' बनाना चाहते थे। शिंदे ने उद्धव ठाकरे के खिलाफ विद्रोह किया और जून 2022 में शिवसेना को विभाजित कर दिया, जिससे ठाकरे के नेतृत्व वाली महाराष्ट्र सरकार गिर गई। ठाकरे पर निशाना साधते हुए शिंदे ने कहा कि जब रोम जल रहा था तो नीरो बांसुरी बजा रहा था और उनका मामला भी ऐसा ही है।

मणिपुर में सामाजिक व सियासी संकट बढ़ा

राष्ट्रपति शासन में राज्य की संवैधानिक व्यवस्था

- लोगों को विस चुनावों का इंतजार
- भाजपा भी नए सीएम के चेहरे की तलाश में
- कांग्रेस समेत अन्य दल भी जुटे
- सभी को मैतेई और कुकी-जो समुदायों के बीच की खाई को पाटने की चुनौती

गीताश्री/4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

इंफाल। कई सालों से हिंसा की आग में जल रहे मणिपुर में आखिरकार वहां के भाजपा के सीएम एन. बीरेन सिंह को हटना पड़ा। फिलहाल वहां राष्ट्रपति शासन लगा है। अब वहां पर चुनाव ही होंगे। ये चुनाव कब होंगे इसका फैसला केंद्र सरकार लेगी। जब भी चुनाव होंगे सभी सियासी पार्टियों सीएम के चेहरे को लेकर चर्चा करनी होगी। पर सबसे ज्यादा हालात भाजपा के खराब हैं।

उनका एक सीएम बीरेन सिंह के रूप में था पर वह वहां की परिस्थती को संभाल नहीं पाए और बीजेपी के शीर्ष नेतृत्व ने उन्हें हटा पर वह उनका विकल्प अब तक तलाश नहीं पाई। हालांकि ऐसा नही हैं कि को सशक्त चेहराने तलाशाने में भाजपा को परेशानी होगी। राज्य में नई नेतृत्व तलाश जारी है। युम्नम खेमचंद सिंह, टी. बिस्वजीत सिंह और टी. सत्यब्रत सिंह प्रमुख दावेदार हैं। बीजेपी को ऐसा नेता चाहिए जो जातीय तनाव को कम कर सके और राज्य में शांति बहाल कर सके। फिलहाल सभी की निगाहें दिल्ली पर हैं।

मणिपुर सीएम के लिए खेमचंद सिंह पर दांव लगेगा

एन बीरेन सिंह के बाद मणिपुर में सीएम की दौड़ में सबसे आगे हैं ग्रामीण विकास और पंचायती राज मंत्री युम्नम खेमचंद सिंह का नाम सबसे आगे चला था। आरएसएस समर्थित खेमचंद, पूर्व विधानसभा अध्यक्ष भी रह चुके हैं। वह मई 2023 में शुरू हुए जातीय संकट से निपटने के बीरेन सिंह के तरीके के मुखर आलोचक रहे हैं। पिछले साल एन बीरेन सिंह की बुलाई गई एक अहम बैठक में शामिल न होने वाले 19 बीजेपी विधायकों में से युम्नम खेमचंद सिंह भी एक थे। हाल ही में उन्हें दिल्ली बुलाया गया है जिससे उनके मुख्यमंत्री बनने की अटकलें और तेज हो गई हैं।

पूर्व फुटबॉलर थे पूर्व मुख्यमंत्री एन. बीरेन सिंह

मणिपुर में सियासी मैदान गरमाया हुआ है। पूर्व फुटबॉलर और मुख्यमंत्री एन. बीरेन सिंह को जैसे ही रेड कार्ड दिखाकर बाहर का रास्ता दिखा दिया गया। हालांकि अब बीजेपी के सामने एक अलग चुनौती खड़ी हो गई है। यह है, एक ऐसे खिलाड़ी की तलाश, जो मणिपुर में खेल का रुख पलट सके। मणिपुर में मैतेई और कुकी के बीच गहरी खाई पड़ चुकी है। पूरा राज्य हिंसा की चपेट में है। बीजेपी एक ऐसे नेता की तलाश में है जो भरोसा और शासन व्यवस्था बहाल कर सके। बीजेपी को एक ऐसे नेता की तलाश है जो मैतेई और कुकी-ज़ो समुदायों के बीच की खाई को पाट सके, ये एक बड़ी चुनौती है। सवाल यह है कि जब राज्य का प्रशासन और सुरक्षा तंत्र ही बंटा हुआ है तो कप्तानी कौन करेगा?

राज्य में शांति और स्थिरता बहाल करना प्राथमिकता

बीजेपी के सामने चुनौती आसान नहीं है। राज्य में शांति और स्थिरता बहाल करना उनकी प्राथमिकता होगी। नए मुख्यमंत्री को सभी समुदायों का विश्वास जीतना होगा और उन्हें साथ लेकर चलना होगा। देखना होगा कि बीजेपी का ये दांव क्या रंग लाता है। मणिपुर के लोगों को उम्मीद है कि नए नेतृत्व में उन्हें शांति और विकास मिलेगा। आने वाले दिन बताएंगे कि राज्य का भविष्य क्या होगा। लेकिन फिलहाल, मणिपुर की राजनीति में उथल-पुथल का दौर जारी है।

दिल्ली पर टिकी निगाहें

फ़िलहाल, सभी की निगाहें दिल्ली में बीजेपी के शीर्ष नेतृत्व पर हैं। मणिपुर अपने नए कप्तान का इंतज़ार कर रहा है। देखना होगा कि बीजेपी किस पर दांव लगाती है और क्या वो राज्य में शांति बहाल कर पाती है। कौन बनेगा मणिपुर का नया मुखिया, ये सवाल अभी भी बना हुआ है।

टी. सत्यब्रत सिंह का नाम भी लिस्ट में

टी. सत्यब्रत सिंह, वर्तमान विधानसभा अध्यक्ष, भी एक संभावित उम्मीदवार माने जा रहे हैं। उन्हें भी दिल्ली में विचार-विमर्श के लिए बुलाया गया था। हालांकि, अभी तक कोई आधिकारिक घोषणा नहीं हुई है। बीजेपी की मणिपुर इकाई की अध्यक्ष अधिकारीमयुम शारदा देवी ने कहा,जब होगा तब पता चलेगा। यह एक प्रक्रिया है।

टी. बिस्वजीत सिंह भी दावेदार

एक और मजबूत दावेदार हैं वरिष्ठ कैबिनेट मंत्री टी. बिस्वजीत सिंह। 2022 से ही शीर्ष पद के लिए उनका नाम चर्चा में रहा है। 2022 में बीजेपी की लगातार दूसरी जीत के बाद भी बीरेन सिंह के विकल्प के रूप में उन पर विचार किया गया था।

हरियाणा में कांग्रेस की हालत पर रार

- राज्य में नेतृत्व का अभाव
- नेताओं-कार्यकर्ताओं का पलायन जारी
- जिम्मेदारी तय करना जरूरी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चंडीगढ़। हरियाणा में कांग्रेस पार्टी मुश्किल दौर से गुजर रही है। अक्टूबर 2024 के विधानसभा चुनावों में बीजेपी से मिली करारी हार के बाद पार्टी अभी तक उबर नहीं पाई है। इस हार का कारण पार्टी के अंदरूनी गुटबाजी को माना जा रहा है। इस हार को पार्टी के लिए चेतावनी समझना चाहिए था, लेकिन ऐसा नहीं हुआ।

पार्टी की राज्य इकाई अपनी स्थिति मजबूत करने में नाकाम रही है। हालात इतने खराब हैं कि कई जिला स्तर के नेता इस डूबते जहाज को छोड़ना चाहते हैं। जहाज जिसका कोई कप्तान नहीं है। आखिर कांग्रेस से थकहार अपने कई नेताओं को बाहर का रास्ता दिखा दिया। विपक्ष के नेता की नियुक्ति को लेकर पार्टी में असमंजस है। अब तो भाजपा भी उस पर तंज कस रही है।

11 सालों से पार्टी में कोई पदाधिकारी नहीं

नवंबर 1966 में हरियाणा के गठन के बाद सात बार अपने दम पर सरकार बनाने वाली पार्टी की यह हालत हैरान करने वाली है। पार्टी के मुख्यमंत्रियों में भागवत दयाल शर्मा, बंसी लाल, बनारसी दास गुप्ता, भजन लाल और भूपेंद्र सिंह हुड्डा शामिल हैं। पार्टी ने कई बार लोकसभा चुनावों में भी क्लीन स्वीप किया है। हरियाणा कांग्रेस जमीनी स्तर पर पार्टी का ढांचा बनाने के लिए भी संघर्ष कर रही है। पिछले 11 सालों से पार्टी में कोई पदाधिकारी नहीं है। पार्टी अभी तक चार महीने पहले हुई हार के कारणों का पता नहीं लगा पाई है। उन लोगों के खिलाफ भी कोई कार्रवाई नहीं हुई है जिन्होंने विधानसभा चुनावों में पार्टी को हार की ओर धकेला।

विपक्ष के नेता की नियुक्ति को लेकर असमंजस

कांग्रेस पार्टी विपक्ष के नेता की नियुक्ति को लेकर लगातार अनिर्णय की स्थिति में है। इससे पार्टी के विधायक और कार्यकर्ता निराश हैं। 90 विधायकों वाली विधानसभा में कांग्रेस के 37 विधायक हैं। फिर भी, हरियाणा की मुख्य विपक्षी पार्टी नेतृत्व विहीन है। इस वजह से नवंबर में हुए विधानसभा सत्र के दौरान कांग्रेस विधायक दल बिना नेता के संघर्ष करता रहा। 7 मार्च से शुरू होने वाले बजट सत्र में भी यही स्थिति दोहराई जा सकती है।

आत्मचिंतन का अभाव

पार्टी में संगठनात्मक ढांचे की कमी और चुनावी हार पर आत्मचिंतन का अभाव है। इससे निराश होकर कुछ वरिष्ठ नेता बीजेपी की ओर जा रहे हैं। रादौर के पूर्व कांग्रेस विधायक बिशन लाल सैनी हाल ही में बीजेपी में शामिल हो गए। इसी तरह, करनाल विधानसभा सीट से पूर्व मुख्यमंत्री और केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल खट्टर और वर्तमान मुख्यमंत्री नायब सैनी के खिलाफ चुनाव लड़ने वाले त्रिलोचन सिंह भी बीजेपी में शामिल हो गए हैं। हिसार से 2024 का विधानसभा चुनाव कांग्रेस के टिकट पर लड़ने वाले राम निवास राड़ा ने भी बीजेपी का दामन थाम लिया है।

कई दिग्गजों ने छोड़ा कांग्रेस का साथ

पिछले साल, उद्योगपति नवीन जिंदल और किरण चौधरी सहित कई कांग्रेस दिग्गज भगवा पार्टी में शामिल हो गए थे। इसका नुकसान लोकसभा और विधानसभा चुनावों में साफ दिखाई दिया। अब, नगर निगम चुनावों से ठीक पहले कांग्रेस नेताओं का बीजेपी में जाना भगवा पार्टी के लिए बड़ा फायदा और कांग्रेस के लिए झटका है। सिरसा के कांग्रेस विधायक गोकुल सेतिया और नारायणगढ़ की शैली चौधरी खुलकर राज्य में बीजेपी के शासन की तारीफ कर रहे हैं। यह उनकी पार्टी के प्रभाव और भविष्य को नुकसान पहुंचा रहा है। हालात इतने खराब हैं कि अटकलें लगाई जा रही हैं कि कई वरिष्ठ कांग्रेस नेता बीजेपी के संपर्क में हैं और निकट भविष्य में सत्ताधारी पार्टी में शामिल हो सकते हैं।

जिद... सच की

Sanjay Sharma
editor.sanjaysharma
@Editor_Sanjay

पेड़ों के दोहन में सरकारी नीति भी जिम्मेदार

पूरे देश में सड़कों का निर्माण तेज हो रहा है। सड़कें सबकी जरूरत के लिए जरूरी हैं। पर ये बड़ी-बड़ी सड़कें विनाश भी ला रही हैं सबसे ज्यादा विनाश परिवेश का हो रहा है। अंधाधुन कटान से गर्मी बढ़ रही है। जिससे कई बीमारियों के बढ़ने का अंदेशा भी बढ़ रहा है। विकास के लिए जहां पेड़ों का कटना जरूरी है वहीं समय की जरूरत कुछ और है। वनों का तेजी के साथ दोहन होने से पर्यावरण बुरी तरह प्रभावित हो रहा है। जलवायु बदल रही है। सासों पर संकट बढ़ रहा है। पोल्यूशन बढ़ने के कारण आक्सीजन मिलना दुर्लभ होता जा रहा है। पेड़ों के दोहन में सरकारी नीति भी जिम्मेदार है। इसी से महानगरों में आदमी की आम आयू कम हो रही है। इसीलिए आज जरूरी हो गया है कि विकास के लिए पेड़ों को न काटा जाए। इन पेड़ों को काटने की जगह यदि इन्हें दूसरी खाली जगह पर ले जाकर लगाया जाए तो समस्या का निदान हो सकता है। कुछ जगह पर यह कार्य हुआ भी है।

गाजियाबाद-दिल्ली ऐलिवेटेड रोड को बनाते समय 64 पेड़ उठाकर दूसरी जगह लगाए गए। उत्तराचंल में भी कई साल पहले यह कार्य हुआ। इसके लिए हम यह कर सकतें हैं कि छोटे पेड़ काट दिए जाएं किंतु बड़े पेड़ दूसरी जगह लगा दिए जाएं। पेड़ का लगाना बहुत सरल है। उसे देखरेख करना बड़ा करना बहुत ही कठिन है। पेड़ों के दोहन में सरकारी नीति भी जिम्मेदार है। नियम है कि पेड़ के काटने के आवेदन के साथ-साथ यह वायदा कराया जाता है कि आज कटे एक पेड़ की जगह दो पेड़ लगाएंगे। प्रति पेड़ काटने के लिए वन विभाग को दो सौ रुपया प्रति पेड़ सुरक्षा धन जमा करना होता है। पेड़ लगाकर वन अधिकारी को आप दिखा देंगे कि पेड़ लगा दिए तो सुरक्षा धन वापस हो जाएगा। आज के समय में दो सौ रुपये कोई मूल्य नहीं रखता । इसलिए कोई पेड़ लगाता नहीं। वन अधिकारी ये दो सौ रुपया सुरक्षा राशि जब्त कर लेते हैं। इस राशि से विभाग बरसात में वृक्षारोपण करता है। पेड़ लगवाने हैं तो हमें यह दो सौ की सुरक्षा राशि बढ़ाकर कम से कम पांच हजार करनी होगी। यह भी आदेश करना होगा कि दस साल से बड़े पेड़ कटेंगे नहीं। दूसरी जगह स्थानांतरित कर दिए जाएंगे। पौधारोपण के नाम पर आमतौर पर सजावटी और विदेशी पौधे रोप दिए जाते हैं जो कम समय में बड़ा आकार ले लेते हैं लेकिन वे किसी भी दृष्टि से पर्यावरण के लिए लाभकारी नहीं होते। इस बात की निगरानी होनी चाहिए और साथ ही जिम्मेदारी भी तय होनी चाहिए कि काटे गए पेड़ों के स्थान पर ईमानदारी से पौधारोपण कर हरियाली को बरकार रखने की कवायद हो। पेड़ फलदार हों या परम्परागत भारतीय पेड़ लगे। पीपल, वटवृक्ष, नीम, पिलखन, साल, शीशम, जामुन और आम जैसे वृक्ष प्रमुखता से लगाए जाएं।

“ जलवायु बदल रही है। सासों पर संकट बढ़ रहा है। पोल्यूशन बढ़ने के कारण आक्सीजन मिलना दुर्लभ होता जा रहा है। पेड़ों के दोहन में सरकारी नीति भी जिम्मेदार है। इसी से महानगरों में आदमी की आम आयू कम हो रही है। इसीलिए आज जरूरी हो गया है कि विकास के लिए पेड़ों को न काटा जाए। इन पेड़ों को काटने की जगह यदि इन्हें दूसरी खाली जगह पर ले जाकर लगाया जाए तो समस्या का निदान हो सकता है।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

बढ़ गया है विसंगतियों को प्रश्रय का खतरा

जयसिंह रावत

उत्तराखंड की धामी सरकार ने नया भूमि कानून पास तो करा दिया है, लेकिन इस कानून से पहाड़वासियों की नाउम्मीदी ज्यादा बढ़ गयी है। सरकारी पक्ष नये कानून को सख्त बताकर प्रचारित कर रहा है, लेकिन गरीब कास्तकारों के पुरखों की जमीनों के भू-खोरों, धन्नासेठों और गैर-कृषकों द्वारा हड़पने के नये रास्ते खुले बताते हैं। हालांकि, किसी देशवासी के लिये बाहरी शब्द का प्रयोग उचित नहीं है फिर भी जिन लोगों को बाहरी माना जा रहा है, उनके लिये उत्तराखंड में जमीनें खरीदने के लिये पिछले दरवाजे खुले हैं। अब तक गैर-कृषक के लिये जमीनों की खरीद पर बंदिशें थीं, लेकिन अब जिसकी भी उत्तराखंड में अचल सम्पत्तियां हैं उनके लिये भी किसानों की जमीनें खरीदने का रास्ता निकल गया है।

दरअसल, ऊपरी तौर पर हरिद्वार और उधमसिंह नगर को छोड़कर सरकार ने शेष 11 पहाड़ी जिलों में जमीनों की खरीद-फरोख्त पर अंकुश तो लगा दिया, मगर नगर निकाय चाहे कहीं की भी हों, उन्हें इस कानून से मुक्त कर दिया। विधि विशेषज्ञ और भू-कानून के लिए आन्दोलन करने वाले इसे प्रदेश की जनता के साथ छलावा बता रहे हैं। नये कानून की धारा दो में कहा गया है कि 'नगर निगम, नगर पंचायत, नगरपालिका परिषद, छावनी परिषद क्षेत्रों की सीमा के अन्तर्गत आने वाले और समय-समय पर सम्मिलित किये जा सकने वाले क्षेत्रों को छोड़कर यह कानून सम्पूर्ण उत्तराखंड राज्य में लागू होगा।' उत्तराखंड की विषम भौगोलिक परिस्थितियों के कारण लोग गांव छोड़कर आसपास के कस्बों में बहुत तेजी से बस रहे हैं इन्हीं नगरीय क्षेत्रों में भूमि की सर्वाधिक खरीद-फरोख्त होती है। शिक्षा, स्वास्थ्य, चिकित्सा शिक्षा, उद्यान, पर्यटन, के लिये निजी न्यास, संस्था, कम्पनी, फर्म, पंजीकृत सहकारी संस्था आदि के लिए भूमि का अन्तरण पर पहले भी प्रतिबंध नहीं था। नयी व्यवस्था में अगर भूमि का अन्तरण जनहित में है तो जमीन चाहने वालों का वास्तविक आंकलन कर भूमि अनिवार्यता प्रमाणपत्र जारी किया जायेगा।

साथ ही अन्तरण अनुमति से पूर्व सम्बंधित विभागों द्वारा निवेश की मात्रा, रोजगार सृजन तथा प्लांट और मशीनरी इत्यादि के परिप्रेक्ष्य में प्रस्ताव का आंकलन करते हुए भूमि अनिवार्यता प्रमाणपत्र विभागाध्यक्ष या एक रैंक नीचे के अधिकारी द्वारा जारी किया जायेगा। कानून में यह भी स्पष्ट किया गया है कि भूमि अन्तरण की अनुमति केवल

हरिद्वार और उधमसिंह नगर में दी जायेगी। अगर भूमि की खरीद-फरोख्त की बंदिशें शेष 11 जिलों के लिये हैं तो उन पहाड़ी जिलों के नगर निकाय क्षेत्र इन दो जिलों की तरह कानून से मुक्त क्यों कर दिये गये? सेवानिवृत्त वरिष्ठ आईएएस अधिकारी एवं उ.प्र रेवेन्यू बोर्ड के पूर्व सदस्य सुरेन्द्र सिंह पांगती का कहना है कि उधमसिंह नगर व हरिद्वार में जमीनों की खरीद-फरोख्त में छूट से जमीनें हड़पने हेतु पिछला दरवाजा खुला है। नये कानून में व्यवस्था की गयी है कि अगर कोई व्यक्ति जो धारा 129 के तहत उत्तराखंड का खातेदार न हो तो उसे रजिस्ट्रार के सामने शपथपत्र देना होगा कि उसके परिवार के किसी भी सदस्य ने आवासीय उद्देश्य के लिये अपने जीवनकाल में 250 वर्गमीटर जमीन नहीं खरीदी है। सरकार को शिकायतें मिली थीं कि कानून का दुरुपयोग करते हुए कुछ लोगों ने परिवार के अन्य सदस्यों के नाम भी 250 वर्गमीटर जमीनें खरीद ली हैं। जबकि मूल कानून में व्यवस्था थी कि एक परिवार एक ही बार जमीन खरीद सकेगा और जमीन खरीदने के बाद भी वह और उसकी पीढ़ियां उत्तराखंड में भूमिधर नहीं मानी जायेंगी। मूल अधिनियम में कुछ खास श्रेणियों के अलावा निजी तौर पर गैर-कृषकों द्वारा जमीनों की खरीद पर रोक थी। लेकिन नये कानून के अनुसार जिस व्यक्ति की 2003 या उससे पहले उत्तराखंड में अचल सम्पत्ति थी उसे भूमिधर मान लिया गया है। इसलिये उसे भी जमीनें खरीदने का अधिकार दे दिया गया है। मसूरी जैसे नगरों में अचल सम्पत्ति वाले लोग बड़ी संख्या में मौजूद हैं जो देश के विभिन्न हिस्सों से हैं। ऐसे लोग प्राय: बड़े उद्योगपति, धनाढ्य और बड़े व्यवसायी होते हैं जो कि बड़े पैमाने पर जमीनों का व्यवसाय कर मूल निवासियों को भूमिहीन बना सकते हैं।

नये कानून में प्रावधान किया गया है कि अगर धारा 129 के तहत कोई व्यक्ति विशेष श्रेणी का भूमिधर है तो बैंक आदि का ऋण न चुका सकने पर उसकी सम्पत्ति की नीलामी हो जाती है तो उसकी सम्पत्ति को उसी श्रेणी का भूमिधर भी खरीद सकेगा और नीलामी में सम्पत्ति गंवाने वाला व्यक्ति बिना अनुमति के दुबारा उतनी ही जमीन खरीद सकेगा। राज्य सरकार के पूर्व विधि सलाहकार डॉ. एन.के. पन्त के अनुसार इस कानून ने जमीनें हड़पने का एक नया रास्ता खोल दिया है। जिनका खेती से कोई लेना-देना नहीं था वे भी अब खेती की जमीनें खरीद सकेंगे।

अमेरिकी नीतियों से यूरोपीय बेचैनी की तार्किकता

मनीष तिवारी

इस महीने की शुरुआत में म्यूनिख सुरक्षा सम्मेलन के 61वें संस्करण में अमेरिका के नव-नियुक्त उपराष्ट्रपति जेम्स डेविड वेंस द्वारा यूरोपियनों को लगाई मौखिक फटकार से यदि उन्हें सदमा न भी लगा हो तो भी हक्के-बक्के तो हुए ही हैं। वेंस ने लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति यूरोपीय लोगों की मौलिक प्रतिबद्धता पर सवाल उठाया, जिसको लेकर उनका तर्क था कि यह अमेरिका-यूरोपीय सहयोग तंत्र की नींव है। भाषण खत्म होते-होते होटल बेयरिशर हॉफ के सम्मेलन कक्ष के फर्श पर यूरोपियन रणनीतिक सिराज बिखर चुका था। यूरोप में चल रहे वर्तमान खेल के बारे में वेंस द्वारा की गई कटु आलोचना पर यूरोप के कुछ नेताओं ने तगड़ी असहमति जताई। सवाल है कि यूरोपीय लोग हक्के-बक्के क्यों हुए, तो इसके लिए यूरोप के साथ संयुक्त राज्य अमेरिका के व्यवहार के पिछले सौ सालों का इतिहास को बांचना पड़ेगा, जो बताता है कि अमेरिका ने सदा अपने 'निज हित' में काम किया है, जिसे वह अपनी सुविधा के अनुसार जब चाहे 'अमेरिकी अपवाद-वाद' के रूप में वर्णित करता है।

प्रथम विश्व युद्ध 28 जुलाई, 1914 को शुरू हुआ था, जिसकी शुरुआत ऑस्ट्रो-हंगेरियन साम्राज्य के युवराज आर्कड्यूक फ्रांज़ फर्डिनेंड और उनकी पत्नी सोफी की हत्या से हुई थी, जो एक बोस्नियाई सर्ब व्यक्ति द्वारा की गई थी। हालांकि, यह एक यूरोपीय युद्ध था, जिसमें ब्रिटेन, फ्रांस और रूस का ट्रिपल एंटेंटे नामक गठजोड़ ऑस्ट्रिया-हंगरी, जर्मनी और इटली वाले ट्रिपल एलायंस से लड़ा, और पहले वाले गुट ने अमेरिकियों को अपना साथ देने का अनुरोध किया। जैक सोनियन विचारधारा वाले सीनेटरों द्वारा अड़ंगा लगाने से राष्ट्रपति वुडरो विल्सन के नेतृत्व वाले संयुक्त राज्य अमेरिका ने इसे यूरोपीय राजशाहियों के बीच युद्ध मानकर पहले इसका हिस्सा बनने से इनकार कर दिया था। लेकिन इसके केवल ढाई साल बाद, 7 अप्रैल, 1917 को, संयुक्त राज्य अमेरिका ने जर्मनी के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर दी, क्योंकि जर्मनों ने उत्तरी अटलांटिक महासागर में अपने अप्रतिबंधित पनडुब्बी युद्ध का दायरा बढ़ा दिया, जिससे अमेरिकियों को भारी जानी-माली नुकसान हो रहा था।

इसमें एक अतिरिक्त उत्प्रेरक रहा, तत्कालीन जर्मन विदेश मंत्री आर्थर जमिरमैन द्वारा प्रेषित एक संदेश, जिसे बाद में कुख्यात 'जमिरमैन टेलीग्राम' का नाम मिला। इसमें मैक्सिकन सरकार से वादा किया गया कि जर्मनी मैक्सिको को वह क्षेत्र वापस पाने में मदद करेगा, जो वह 1846-1848 के मैक्सिकन-अमेरिकी युद्ध के दौरान संयुक्त राज्य अमेरिका को हार चुका था। इस सहायता के बदले में, जर्मनी ने युद्ध में मैक्सिको का समर्थन मांगा। यह कहना राष्ट्रपति जेम्स मोनरो और उनके विदेश मंत्री जॉन क्विंसी एडम्स द्वारा परिकल्पित उस 'मोनरो सिद्धांत' से सीधा टकराव था, जिसे 2 दिसंबर, 1823 को अमेरिकी संसद को मोनरो के संबोधन के दौरान व्यक्त किया गया था। इसमें कहा गया कि पश्चिमी गोलार्ध का इलाका, खासकर अमेरिकी महाद्वीप की तरफ, संयुक्त राज्य अमेरिका का प्रभाव क्षेत्र है और यूरोपियनों को हमारे इस विशेषाधिकार वाले क्षेत्र में हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार नहीं है। इस प्रकार, जब केवल अपने हितों पर खतरा बनता देखा, तभी संयुक्त राज्य अमेरिका यूरोपीय युद्ध में दाखिल हुआ।

लीग ऑफ नेशन्स में 28 जून 1919 को राष्ट्रपति विल्सन की पहलकदमी से बनी 'वर्सायलेस की संधि' टूट गई, जब फरवरी 1933 में जापानियों ने किनारा कर लिया और इसके आठ महीने बाद जर्मनी भी पीछे हट गया, तब संयुक्त राज्य अमेरिका एक बार फिर से अलग-थलग पड़ गया, जबकि एडोल्फ हिटलर और उसके नाजियों ने 1938 के बाद से यूरोप के इलाके और देशों को हड़पते गए, जिसकी शुरुआत उसी वर्ष मार्च में ऑस्ट्रिया का एंस्क्लस कब्जाने से हुई। यहां तक कि जब 1940 के मई से नवंबर माह के बीच ग्रेट ब्रिटेन अपने सबसे बुरे वक्त में अकेला खड़ा था, तब भी राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने 1939 के तटस्थता अधिनियम और 1934 के जॉनसन अधिनियम का हवाला देते हुए उसकी मदद करने में अपनी असमर्थता व्यक्त की थी। हालांकि बाद में कुछ नवीन तरीके खोजे गए, जब द्वितीय विश्व युद्ध में संयुक्त राज्य अमेरिका को औपचारिक रूप से प्रवेश 7 दिसंबर, 1941 को पर्ल हार्बर पर हुए जापानी हमले के बाद करना पड़ा।

जापान के खिलाफ युद्ध शुरू करने की घोषणा 8 दिसंबर 1941 को ही की गई थी। तीन दिन बाद जब जर्मनी और इटली ने भी 11 दिसंबर 1941 को अमेरिका के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर दी, तब जाकर इसने भी जवाबी ऐलान किया। निष्कर्ष यह है, बहुत संभव है कि जब यूरोप गेस्टापो और शुट्ज़स्टाफेल के गुंडों के अधीन कराह रहा था, तब भी अमेरिका ने तटस्थता बनाए रखी होती अगर जापानियों ने उसपर हमला न किया होता। आगे कुछ दशकों बाद, एक दशक तक चली लड़ाई के बाद, अमेरिका को 30 अप्रैल, 1975 को वियतनाम से वापसी करनी पड़ी, एक ट्रिलियन डॉलर से अधिक खर्च होने और 58,000 से अधिक का जानी नुकसान करवाने के बाद उसने दक्षिण वियतनाम में अपना सैन्य अभियान समाप्त किया। यह एक और उदाहरण है कि कैसे बदला हुए घरेलू माहौल इसकी अंतर्राष्ट्रीय प्रतिबद्धताओं पर भारी पड़ा। वहां इस लड़ाई में अमेरिका का साथ देने वाले दक्षिण वियतनामी लोगों में अधिकांश को उत्तरी वियतनामी 'साथियों' के रहमो-करम पर छोड़कर वे निकल आए।

घर में गैस पर इस तरह बनाएं बाटी-चोखा

लिट्टी चोखा बिहार और उत्तर प्रदेश का पारंपरिक व्यंजन है। इसे कुछ जगहों पर बाटी-चोखा भी कहा जाता है। ये झारखंड और पूर्वी उत्तर प्रदेश के कुछ हिस्सों में भी काफी लोकप्रिय है। भारत ही नहीं नेपाल में भी लिट्टी चोखा खाया जाता है। बाटी या लिट्टी आटे की लोई होती है, जिसके अंदर सत्तू, बेसन आदि का भरावन होता है। इस गोलाकार लोई को चूल्हे पर, तंदूर पर बनाया जाता है। हालांकि अधिकतर घरों के आधुनिक किचन में चूल्हा या तंदूर नहीं मिलता है। ऐसे में बाटी को लोग ओवन या एयरफ्रायर में बनाते हैं। अगर आपके पास ओवन या एयरफ्रायर भी नहीं है तो घर के गैस चूल्हे पर भी बाटी बनाई जा सकती है। गैस पर बाटी बनाना काफी आसान है और इसका स्वाद भी तंदूरी बाटी जैसा ही होता है।

सामग्री

अगर आपको बाटी चोखा बनानी है तो उसके लिए दो कप गेहूं का आटा, दो बड़े चम्मच सूजी, चार चम्मच घी, नमक, बेकिंग पाउडर, हींग, जीरा, पानी, घी।

एक बड़े बर्तन में गेहूं का आटा, सूजी, नमक, हींग

विधि

और जीरा डालकर मिला लें। चार बड़े चम्मच घी के डालकर अच्छी तरह से मिला लें। थोड़ा-थोड़ा पानी डालते हुए सख्त आटा गूथ लें और गूथे हुए आटे को 15-20 मिनट ढककर रख दें। बाटी बनाने के लिए छोटे-छोटे आकार की लोइयां लेकर गोल बना लें। हल्के हाथों से गोलों को हल्का चपटा करें। ध्यान रखें कि इसमें कोई दरार न आए। बाटी बनाने के लिए फिलिंग का तरीका वैसा ही रखें जैसे ओवन और तंदूर में होता है। आप सत्तू भी बाटी में भर सकते हैं। गैस पर बाटी सेंकने के लिए तवा या जाली (ग्रिल स्टैंड) का उपयोग करते हुए तवे को गैस पर रखकर गर्म करें। इसमें बाटियों को रखें और धीमी आंच पर सेंकें। तीन-चार मिनट में बाटियों को पलटते रहें ताकि वे चारों ओर से अच्छी तरह से सिक जाएं। जब बाटियां सुनहरी और क्रिस्पी हो जाएं तो हटा लें।

घर पर ऐसे तैयार करें मूंग दाल के पकौड़े

अक्सर व्यक्ति छुट्टी के दिन घर पर ही बना रहता है तो वह घर पर कुछ न कुछ हल्का फुल्का खाने के बारे में सोचता है ऐसे में लोग मूंग दाल के पकौड़े एक ऐसा स्वादिष्ट स्नैक्स हैं, जिसे आप आसानी से घर पर तैयार कर सकते हैं। ये खाने में काफी अच्छे लगते हैं, इसे बच्चे से लेकर बड़े तक काफी चाव से खाते हैं। यदि आप भी घर पर पकौड़ों का लुफ्त उठाना चाहते हैं तो इसे आप आसानी से बनाया जा सकता है जिसे खाकर हर कोई आपकी तारीफ करेगा।

हरी चटनी के साथ खाकर आएगा मजा

सामान

मूंग दाल- 1 कप, हरी मिर्च - 2-3, अदरक - 1 इंच का टुकड़ा, धनिया पत्ती - 2 टेबलस्पून, नमक - स्वादानुसार, हींग- 1 चुटकी, जीरा - 1/2 टीस्पून बेकिंग सोडा - 1 चुटकी, तेल - तलने के लिए।

विधि

पकौड़े बनाने के लिए सबसे पहले मूंग दाल को 3-4 घंटे के लिए पानी में भिगो दें। भीगी हुई मूंग दाल को पानी से निकालकर मिक्सर में डालें। इसमें 1-2 टेबलस्पून पानी मिलाकर दरदरा पेस्ट बना लें। ध्यान रखें कि पेस्ट बहुत ज्यादा पतला न हो। अब इस को एक बड़े बर्तन में निकालें। इसमें कटी हुई हरी मिर्च, अदरक, धनिया पत्ती, नमक, हींग, और जीरा डालकर अच्छी तरह मिक्स करें। अगर आप पकौड़ों को और फूला हुआ बनाना चाहते हैं, तो इसमें बेकिंग सोडा डाल सकते हैं। अब कड़ाही में तेल गरम करें। जब तेल मध्यम गरम हो जाए, तो हाथ या चम्मच की मदद से दाल के छोटे-छोटे हिस्से लेकर तेल में डालें। पकौड़ों को धीमी आंच पर गोल्डन ब्राउन और कुरकुरा होने तक तलें। तले हुए पकोड़ों को किचन टिशू पर निकालें, ताकि अतिरिक्त तेल निकल जाए। गरमा-गरम मूंग दाल के पकौड़े को हरी चटनी या टमाटर की चटनी के साथ परोसें। वहीं पकौड़े को कुरकुरा बनाने के लिए दाल का पेस्ट गाढ़ा रखें। चाहें तो मिश्रण में बारीक कटा प्याज भी डाल सकते हैं।

मसालों का स्वाद अपनी पसंद के अनुसार बदल सकते हैं।

हंसना मना है

गर्लफ्रेंड- मेरी मम्मी को तुम बहुत पसंद आये हो, पप्पू- चल पगली-कुछ भी हो, मैं शादी तुमसे ही करूंगा.. आंटी से कहना वो मुझे भूल जाएं।

ठोकर खाकर गुणगुणाना ही जिन्दगी है, गम पी कर मुस्कुराना ही जिन्दगी है, एक लड़की अगर धोखा दे दे तो सब कुछ भूल कर दूसरी को पटाना ही जिन्दगी है।

मोहब्बत के खर्चों की बड़ी लंबी कहानी है, कभी फिल्म दिखानी है तो कभी शॉपिंग करानी है, मास्टरजी रोज कहते है कहां है फीस के पैसे? उसे समझाऊं मैं कैसे की मुझे छोरी पटानी है !

पापा: बेटा तुम पास हो या ना हो मैं तुम्हें बाइक जरूर दिला दूंगा।। पप्पू: थैंक्यू पापा जी, पापा: अगर पास हुये तो 'हीरो होन्डा' कॉलेज जाने के लिये, अगर फेल हुये तो 'राजदूत' दूध बेचने के लिये।

फ्रेंड- यार तुम्हारी दुकान मिठाई की है, तो क्या तुम्हारा दिल नहीं करता, मिठाई खाने को? सांता- यार करता तो बहोत है, लेकिन पापा रसगुल्ले गिन के जाते है, तो इसलिए,चूसकर रख देता हूं।

कहानी — रामसेतु में गिलहरी का योगदान

माता सीता का हरण होने के बाद, भगवान राम को लंका तक पहुंचने के लिए वानर सेना समुद्र के ऊपर पुल बनाने के काम में लग जाती है। पुल बनाने के लिए पत्थर पर भगवान श्रीराम का नाम लिखकर पूरी सेना समुद्र में पत्थर डालती है। भगवान राम का नाम लिखे जाने की वजह से पत्थर समुद्र में डूबने के बजाय तैरने लगते हैं। यह सब देखकर सभी वानर काफी खुश होते हैं और तेजी से पुल बनाने के लिए पत्थर समुद्र में डालने लगते हैं। भगवान राम पुल बनाने के लिए अपनी सेना के उत्साह, समर्पण और जुनून को देखकर काफी खुश होते हैं। उस वक्त एक गिलहरी मुंह से कंकड़ उठाकर नदी में डाल रही थी। जिसे एक वानर देख रहा था। कुछ देर बाद वानर गिलहरी को देखकर मजाक बनाता है। वानर कहता है, हे! गिलहरी तुम इतनी छोटी-सी हो, समुद्र से दूर रहो। कहीं ऐसा न हो कि तुम इन्हीं पत्थरों के नीचे दब जाओ। गिलहरी यह सब सुनकर बहुत दुखी हो जाती है। भगवान राम भी दूर से यह सब होता देखते हैं। गिलहरी की नजर जैसे ही भगवान राम पर पड़ती है, वो रोते- रोते भगवान राम के समीप पहुंच जाती है। परेशान गिलहरी श्री राम से सभी वानरों की शिकायत करती है। तब भगवान राम खड़े होते हैं और वानर सेना को दिखाते हैं कि गिलहरी ने जिन कंकड़ों व छोटे पत्थरों को फेंका था, वो कैसे बड़े पत्थरों को एक दूसरे से जोड़ने का काम कर रहे हैं। भगवान राम कहते हैं, अगर गिलहरी इन कंकड़ों को नहीं डालती, तो तुम्हारे द्वारा फेंके गए सारे पत्थर इधर-उधर बिखरे रहते। ये गिलहरी के द्वारा फेंके गए पत्थर ही हैं, जो इन्हें आपस में जोड़े हुए हैं। पुल बनाने के लिए गिलहरी का योगदान भी वानर सेना के सदस्यों जैसा ही अमूल्य है। इतना सब कहकर भगवान राम बड़े ही प्यार से गिलहरी को अपने हाथों से उठाते हैं। फिर, गिलहरी के कार्य की सराहना करते हुए श्री राम उसकी पीठ पर बड़े ही प्यार से हाथ फेरने लगते हैं। भगवान के हाथ फेरते ही गिलहरी के छोटे-से शरीर पर उनकी उंगलियों के निशान बन जाते हैं। तब से ही माना जाता है कि गिलहरियों के शरीर पर मौजूद सफेद धारियां कुछ और नहीं, बल्कि राम की उंगलियों के निशान के रूप में उनका आशीर्वाद है।

7 अंतर खोजें

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष — कम प्रयास से काम बनेंगे। धनार्जन होगा। प्रतिष्ठा बढ़ेगी। स्वास्थ्य कमजोर रहेगा। व्यवसाय ठीक चलेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखना होगा। परिवार से संबंध घनिष्ठ होंगे।

वृषभ — मेहमानों का आगमन होगा। शुभ समाचार प्राप्त होंगे। आत्मसम्मान बढ़ेगा। वाणी पर नियंत्रण रखें। व्यापार में परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है।

मिथुन — लेन-देन में सावधानी रखें। रोजगार मिलेगा। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। अचानक लाभ होगा। धन संबंधी कार्यों में विलंब से चिंता हो सकती है।

कर्क — चोट व रोग से हानि संभव है। कुसंगति से हानि होगी। विवाद न करें। फालतू खर्च बढ़ेंगे। आवास संबंधी समस्या का समाधान संभव है। व्यापार अच्छा रहेगा।

सिंह — शारीरिक कष्ट संभव है। लेन-देन में सावधानी रखें। सुख के साधन जुटेंगे। रुका हुआ धन मिलेगा। अधूरे काम समय पर सफलता से होने पर उत्साह बढ़ेगा।

कन्या — दुष्टजन हानि पहुंचा सकते हैं। नई योजना बनेगी। कार्यप्रणाली में सुधार होगा। आय बढ़ेगी। भोग-विलास में रुचि बढ़ेगी। जीवनसाथी से संबंधों में प्रगाढ़ता आएगी।

तुला — कोर्ट व कचहरी में अनुकूलता रहेगी। पूजा-पाठ में मन लगेगा। व्यवसाय ठीक चलेगा। थकान रहेगी। वाणी पर संयम आवश्यक है। व्यापार-व्यवसाय में लाभ होगा।

वृश्चिक — चोरी, चोट व विवाद आदि से हानि संभव है। जोखिम व जमानत के कार्य टालें। धनार्जन होगा। भागदौड़, बाधाओं व सतर्कता के बाद सफलता मिलेगी।

धनु — पुराना रोग उभर सकता है। बेचैनी रहेगी। जीवनसाथी से सहयोग मिलेगा। कानूनी बाधा दूर होगी। रुका धन मिलने से धन संग्रह होगा। कार्य में भागीदार सहयोग करेंगे।

मकर — घर-परिवार की चिंता रहेगी। भूमि व भवन संबंधी योजना बनेगी। बेरोजगारी दूर होगी। आपका सामाजिक क्षेत्र बढ़ेगा। लाभदायक सौदे होंगे।

कुम्भ — शत्रु परास्त होंगे। पार्टी व पिकनिक का आनंद मिलेगा। विद्यार्थी वर्ग सफलता हासिल करेगा। धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। किसी नए कार्य में भाग लेने के योग हैं।

मीन — आज आपको घर-परिवार की चिंता रहेगी। विवाद को बढ़ावा न दें। स्वास्थ्य कमजोर रहेगा। जोखिम न लें। अचानक यात्रा के भी अच्छे फल मिलेंगे।

फिल्म सिकंदर का टीजर जारी पुराने एक्शन में दिखे भाईजान

सलमान खान की आगामी फिल्म सिकंदर का दर्शक सांसे थामकर इंतजार कर रहे हैं। हालांकि, फिल्म को रिलीज होने में तो अभी वक्त है, क्योंकि फिल्म तो ईद पर रिलीज होगी। लेकिन आज गुरुवार को फैंस को एक तोहफा जरूर मिल गया है। सिकंदर का टीजर जारी हो चुका है।

सलमान खान ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट से टीजर शेयर किया है। इसके साथ लिखा है, जो दिलों पर करता है राज, वो आज कहलता है सिकंदर। टीजर की शुरुआत में सलमान खान की आवाज आती है, दादी ने नाम सिकंदर रखा था। दादा ने संजय और प्रजा ने राजा साहब। इसके बाद दूसरी आवाज आती है, अपने आप को बहुत बड़ा सिकंदर समझता है। इंसाफ दिलाएगा तू? सलमान कहते हैं, इंसाफ नहीं, हिसाब करने आया हूं। कायदे में रहो फायदे में रहोगे।

टीजर में सलमान खान एक्शन करते दिखे हैं। अपने चिर-परिचित अंदाज में दुश्मनों के छक्के छुड़ाते दिखे

हैं, जैसे कि हमेशा परदे पर नजर आते हैं। इस फिल्म में रश्मिका मंदाना भी नजर आएंगी। पूरे टीजर में दो से तीन बार रश्मिका की झलक है। वे एकदम टिपिकल हीरोइन वाले अंदाज में हैं। सिर्फ एक जगह वह बोलती दिखी हैं। सलमान से पूछती हैं, तुम्हारे दुश्मनों में तुम कितने पॉपुलर हो। हालांकि, पिछली फिल्मों में लगातार पल्ली वाले रोल में साड़ी पहने दिखने वाली रश्मिका का लुक इस बार जरा हटकर दिखा है। किरदार की पूरी तस्वीर तो फिल्म में ही साफ हो पाएगी।

सलमान खान अभिनीत इस फिल्म को साजिद नाडियाडवाला प्रोड्यूस कर रहे हैं। इसके निर्देशन की कमान एआर मुरुगदास ने संभाली है। फिलहाल टीजर पर मिली जुली प्रतिक्रिया आ रही हैं। यूजर्स शाहरुख खान के कैमियो की डिमांड कर रहे हैं। एक यूजर ने लिखा, भाई संजय दत्त और शाहरुख खान का कमैयो रखना मूवी में। एक यूजर ने लिखा, सलमान खान आ रहे हैं, फिल्म तो ब्लॉकबस्टर रहेगी।

थिएटर के बाद अमेजन प्राइम पर स्ट्रीम होगी धनुष की फिल्म कुबेर

हाल ही में धनुष की फिल्म कुबेर की रिलीज डेट से पर्दा उठा था। 27 फरवरी को आधिकारिक तौर पर यह खुलासा किया गया कि शेखर कम्मुला द्वारा निर्देशित कुबेर 20 जून 2025 को कई भारतीय भाषाओं में रिलीज होगी। इस फिल्म में धनुष के साथ रश्मिका मंदाना मुख्य भूमिका में नजर आएंगी। अब इस फिल्म के ओटीटी पार्टनर से पर्दा उठ गया है।

मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, रिलीज की तारीख की घोषणा करने के बाद कुबेर ने निर्माताओं ने अमेजन प्राइम वीडियो के साथ फिल्म की ओटीटी साझेदारी कर ली है। स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म ने भारी कीमत पर सभी भाषाओं में कुबेर के डिजिटल अधिकार हासिल कर लिए हैं।

फिल्म में धनुष और रश्मिका मंदाना के अलावा जिम सर्भ और अक्किनेनी नागार्जुन भी अहम भूमिकाओं में नजर आएंगे। कुबेर को श्री वेंकटेश्वर सिनेमा एलएलपी और एमिगोस क्रिएशंस प्राइवेट लिमिटेड द्वारा समर्थित किया गया है। देवी श्री प्रसाद ने फिल्म का संगीत तैयार किया है।

कुबेर धारावी की पृष्ठभूमि पर आधारित है और यह एक व्यक्ति के गरीबी से अमीरी तक के विकास की कहानी दर्शाती है। सुनील नारंग और पुष्कर राम मोहन राव श्री वेंकटेश्वर सिनेमा एलएलपी और एमिगोस क्रिएशंस प्राइवेट लिमिटेड के बैनर तले कुबेर को बनाया जा रहा है। वहीं देवी श्री प्रसाद फिल्म का संगीत दिया है। फिल्म कुबेर के निर्माताओं ने एक्स पर फिल्म के एक पोस्टर के साथ शेयर की रिलीज की तारीख। इस पोस्टर में धनुष और नागार्जुन नजर आ रहे हैं। साथ ही इस पोस्टर के साथ लिखा, शक्ति की कहानी, धन के लिए लड़ाई, भाग्य का खेल। शेखर कम्मुला कुबेर 20 जून, 2025 से एक आकर्षक अनुभव देने के लिए तैयार है।

बॉलीवुड | मन की बात

मैंने खुद ही राज्यसभा सीट का ऑफर ठुकरा दिया था : प्रीति जिंटा

प्रीति जिंटा ने ट्विटर के माध्यम से अपने फैंस से बातचीत की। इस दौरान उन्होंने महाकुंभ 2025 की तस्वीरें साझा करने के बाद खुद पर हो रही ट्रोलिंग के बारे में भी चर्चा की। अभिनेत्री ने यह भी कहा कि उन्हें कई पार्टियों से टिकट और राज्यसभा की सीट का ऑफर दिया गया, लेकिन उन्होंने इसके लिए मना कर दिया, क्योंकि उन्हें राजनीति में शामिल होने में कोई दिलचस्पी नहीं है। अभिनेत्री ने ट्विटर पर फैंस से बातचीत के दौरान एक यूजर ने पूछा, आपकी कुंभ की तस्वीर ने आपके खिलाफ ट्रोल की बाढ़ क्यों ला दी? इस पर अभिनेत्री ने कहा, जो लोग आपको नीचे गिराने की कोशिश करते हैं, वह पहले से ही आपसे नीचे हैं, इसलिए उनकी और ट्रोल्स की कौन परवाह करता है। उन्होंने कहा, असली हिम्मत तब होती है जब आप अपने और अपने आसपास सकारात्मक बदलाव लाने की कोशिश करते हैं और दुनिया को दूसरों के लिए एक बेहतर जगह बनाते हैं। हाल ही में प्रीति जिंटा ने 'महाकुंभ 2025' का दौरा किया। इसके बाद उन्होंने सोशल मीडिया पर महाकुंभ से अपनी तस्वीरें शेयर की। जिसके बाद कांग्रेस पार्टी ने उन पर अपना सोशल मीडिया अकाउंट भाजपा को सौंपने का आरोप लगाया था, जिसका उन्होंने खंडन किया। उन्होंने पहले केरल कांग्रेस के आधिकारिक एक्स हैंडल पर जवाब देते हुए कहा था कि वह अपना अकाउंट खुद मैनेज करती हैं। ट्विटर पर बातचीत के दौरान एक प्रशंसक ने उनसे पूछा कि क्या वह राजनीति में आने का प्लान कर रही हैं? इसके जवाब में प्रीति ने साफ तौर पर कहा कि उनकी कोई राजनीतिक महत्वाकांक्षा नहीं है। अभिनेत्री ने कहा, नहीं! मेरे लिए कोई राजनीति नहीं। पिछले कुछ वर्षों में विभिन्न पार्टियों ने मुझे टिकट और राज्यसभा सीटें देने की पेशकश की है, लेकिन मैंने विनम्रतापूर्वक मना कर दिया है, क्योंकि जो मैं चाहती हूं यह वह नहीं है। इस बीच प्रीति जिंटा 'लाहौर 1947' के साथ वापसी करने के लिए पूरी तरह तैयार हैं। इस फिल्म में सनी देओल और उनके बेटे करण देओल भी हैं।

यह पक्षी आसमान ही खाता है सोता है और लगातार 10 महीने तक उड़ता है

इस धरती पर कई ऐसे जीव हैं, जिनके खासियत जानने के बाद हैरानी होती है। आज हम आपको एक ऐसे ही पक्षी के बारे में बताने जा रहे हैं, जो आकाश में ही खाता है, आकाश में ही सोता है और लगातार 10 महीने तक उड़ सकता है। अब आप सोच रहे होंगे कि उस पक्षी का नाम क्या है, ऐसे में बता दें कि आकाश में खाने-पीने और सोने वाले रहस्यमयी पक्षी का नाम कॉमन स्विफ्ट है। शोध से पता चला है कि ये पक्षी लगातार 10 महीनों तक आकाश में उड़ सकते हैं। ऐसे पक्षी आमतौर पर यूरोप में पाए जाते हैं, जिसे कॉमन स्विफ्ट पक्षी के रूप में जाना जाता है। यह पक्षी काफी हद तक फिंक जैसा दिखता है। यह पक्षी अपनी गति के साथ-साथ उड़ने की क्षमता के लिए भी प्रसिद्ध है। कई लोगों को आश्चर्य होता है कि यह पक्षी कैसे सोता है, जबकि यह लगातार 10 महीने तक उड़ने की क्षमता रखता है! शोधकर्ताओं ने बताया है कि बहुत अधिक ऊंचाई पर जब ये पहुंच जाता है, तो वहां से धीरे-धीरे उतरते समय यह हल्की झपकी ले लेता है। इतना ही नहीं, तेज उड़ने वाला यह पक्षी आकाश में उड़ने वाले कीटों को पकड़ते हैं और खाते हैं। आपको जानकर हैरानी होगी, लेकिन बता दें कि ये पक्षी उड़ते समय भी अपने पार्टनर से संबंध स्थापित कर लेते हैं। वैसे तो यह पक्षी 10 महीने तक बिना जमीन को छुए उड़ सकता है, लेकिन कभी-कभी खराब मौसम में यह तेज पक्षी जमीन पर आ जाता है। कॉमन स्विफ्ट का आकार टारपीडो मिसाइल जैसा होता है, तथा इसके पंख तीखे व लंबे होते हैं। सदियों से पक्षी प्रेमी इस पक्षी की उड़ान कौशल से मोहित होते रहे हैं। इस लंबी यात्रा के कारण पक्षी का नाम गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में भी दर्ज है। विज्ञान शिक्षक अरूप दत्ता ने बताया कि यह पक्षी जब किसी पेड़ की टहनी या जमीन पर उतरता है तो वह सिर्फ एक से दो घंटे के लिए ही रहता है। इसके बाद उनकी उड़ान पुनः शुरू हो जाती है।

अजब-गजब | इस 9 साल के लड़के के हौसले को सब कर रहे सलाम

इस बच्चे ने मौत के मुंह से निकाल लाया माता-पिता को

कई बार ऐसी घटनाएं घटित हो जाती हैं जिन पर यकीन करना मुश्किल हो जाता है। कभी कभी छोटे बच्चे भी ऐसी गजब की हिम्मत दिखा देते हैं कि बड़े-बड़े लोग भी हैरान रह जाते हैं। ऐसी ही एक घटना पिछले साल देखने को मिली। दरअसल एक 9 साल के बच्चे ने अपने माता–पिता की जान बचाई और हीरो बन गया। इंटरनेट पर हर कोई बच्चे की बहादुरी और हिम्मत की तारीफ कर रहा था।

घटना अमेरिका के मैरिएटा शहर की है। यहां एक परिवार की कार तूफानी बवंडर में फंस गई। उस कार में पूरा परिवार बैठा था। उस कार में वेन और लिंडी के साथ उनका 9 साल का बेटा भी था। उनकी कार बवंडर में फंसने के बाद हवा में उछल गई और एक पेड़ उखड़कर उनकी कार से जा टकराया। कार में माता पिता बुरी तरह से फंस गए। वहीं 9 साल का बच्चा ब्रैनसन किसी तरह मुश्किल से कार से बाहर निकल गया।

इसके बाद तूफान में बिजली के तारों से होते हुए वो 9 साल का बच्चा मदद के लिए डेढ़ किलोमीटर तक तब तक दौड़ा, जब तक कि उसे मदद नहीं मिली। बच्चे के पिता वेन ने कहा कि हमारी मौत हो सकती

थी मगर बेटे ने बहादुरी दिखाकर हीरो की तरह काम किया। हम लगभग 1 मील तक इस खतरनाक बवंडर को देख सकते थे। मगर ब्रैनसन सिर्फ दौड़ रहा था।

9 साल के ब्रैनसन ने मीडिया से बात करते हुए बताया था कि वह बहुत डर गया था। जैसे ही मदद को भागा– उसने माता पिता से कहा मरना मत... अभी आ रहा हूं। इस घटना के बाद यह बच्चा इंटरनेट पर स्टार बन गया। हर कोई बच्चे की बहादुरी की तारीफ कर रहा था। एक ने कहा कि इतना घायल होने के बाद भी ये बच्चा बवडंर में 1 मील तक दौड़ा। ये सिर्फ 9 साल का है। कितना बहादुर लड़का है।

यूपी और राजस्थान में सबसे ज्यादा होता है दलितों पर अत्याचार : टीकाराम

» कांग्रेस नेता ने राजस्थान सरकार को घेरा, बोले- हर महीने हो रही तीन दलित और 1 आदिवासी की हत्या

» नेता प्रतिपक्ष ने कहा- एससी-एसटी को नहीं मिल रहा सरकारी लाभ

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

जयपुर। राजस्थान विधानसभा के नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली ने विधानसभा में जनजाति क्षेत्रीय विकास एवं सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग की अनुदान की मांगों पर चर्चा के दौरान कहा कि सामाजिक न्याय और दलितों की बात पर लंबी-लंबी बातें करने वाली सरकार ने अपने घोषणा-पत्र में अनुसूचित जाति और जनजाति वर्ग के लोगों से किए गए एक भी वादे को पूरा नहीं किया है। उन्होंने केन्द्र सरकार की एक रिपोर्ट का हवाला देते हुए कहा कि दलितों पर अत्याचार होने वाले राज्यों में यूपी के बाद राजस्थान में हर महीने तीन दलित और एक आदिवासी की हत्या हो रही है।

प्रतिपक्ष के नेता टीकाराम जूली ने कहा कि देश में आज भी दलितों की स्थिति बेहद चिंताजनक है। उन्होंने कहा कि कुछ संभागों में तो स्थिति इससे भी बदतर है। प्रतिपक्ष के नेता जूली ने कहा कि प्रदेश में आज भी दलितों के दूल्हों की बारात पुलिस के संरक्षण में निकाली जाती है। उन्होंने कहा कि इसके लिए हमारी मानसिकता दोषी है। जब तक मानसिकता नहीं बदलेगी, तब तक इसका समाधान निकाला जाना मुश्किल है।

विधवा व दिव्यांग पेंशन का भुगतान पिछले कई महीनों से बकाया

उन्होंने कहा कि आज प्रदेश में वृद्धावस्था पेंशन हो या विधवा पेंशन या फिर दिव्यांगों को मिलने वाली पेंशन, इनका भुगतान पिछले कई महीनों से बकाया है। प्रतिपक्ष के नेता जूली ने कहा कि सरकार पेंशन के जवाब पर हर बार अलग-अलग जवाब देती है। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार द्वारा बच्चियों के लिए स्कूटी दिए जाने की योजना शुरू की गई थी, आज करोड़ों रुपये की स्कूटी कबाड हो रही हैं और बालिकाएं इंतजार कर रही हैं। जबकि सरकार कह रही है कि हमने योजना को बंद नहीं किया है। आज प्रदेश में सामाजिक समरसता और सौहार्द को बढ़ाए जाने की जरूरत है, ताकि लोगों का सोच बदले। पिछले डेढ़ वर्षों में दलितों पर अत्याचार की स्थिति को देखें तो प्रदेश के सरकारी कार्यालयों और विद्यालयों में कार्यरत दलित अधिकारी और कर्मचारियों के साथ जातीय द्वेषता बढ़ी है। प्रदेश में घटी दलित अत्याचार और हत्या की घटनाओं का सिलसिलेवार ब्यौरा देते हुए जूली ने कहा कि उन्हें प्रताड़ित और अपमानित किया जा रहा है, जिनमें से कई मामलों में तो प्रताड़ित हुए लोगों को मानसिक अवसाद की स्थिति में आत्महत्या तक करने को मजबूर होना पड़ा है।

नेता प्रतिपक्ष की माफी पर कांग्रेस का एक धड़ा नाराज

राजस्थान विधानसभा में सत्तापक्ष और प्रतिपक्ष के बीच 7 दिनों तक चला गतिरोध समाप्त हो गया। प्रतिपक्ष की तरफ से नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली ने डोटासरा के किए के लिए सदन में माफी मांग ली। इसके बाद विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने सभी 6 कांग्रेसी विधायकों के निलंबन को निरस्त करने का प्रस्ताव भी पारित कर दिया लेकिन सूत्रों की मानें तो इस माफी को लेकर अब कांग्रेस बंट गई है। सूत्रों का कहना है कांग्रेस का एक धड़ा इस बात से आहत है कि जूली ने सदन में एकतरफा माफी मांगी जबकि सरकार के मंत्री अविनाश गहलोत ने उस शब्द के लिए कुछ भी नहीं कहा, जिस पर सारा विवाद खड़ा हुआ। गुरुवार शाम निलंबन समाप्त होने के बाद भी डोटासरा सदन में नहीं पहुंचे और आज शुक्रवार को भी वे कार्रवाई में शामिल नहीं हुए। बताया जा रहा है कि वे माफी वाली बात से नाखुश हैं। डोटासरा ही नहीं कांग्रेस के एक बड़े नेता ने भी इस तरह से सदन में माफी मांगने पर ऐतराज जताया है।

हमें जनता ने नहीं, मशीन मनी और मैनिपुलेशन ने हराया : हुड्डा

4पीएम न्यूज नेटवर्क

चंडीगढ़। विधानसभा चुनाव में पूर्व सीएम भूपेंद्र सिंह पूरी तरह से आश्वस्त थे कि कांग्रेस दस साल बाद सत्ता में जोरदार वापसी करने जा रही है। चुनाव परिणाम जब सामने आए तो पार्टी को बुरी तरह से झटका लगा। इस पर पूर्व सीएम भूपेंद्र सिंह हुड्डा कहते हैं कि उन्हें जनता ने नहीं बल्कि मशीन, मनी और मैनिपुलेशन ने हराया।

निकाय चुनाव में भी उन्होंने ईवीएम के बजाय पेपर बैलेट से चुनाव कराने की मांग रखी थी। मशीन, मनी और मैनिपुलेशन। चुनाव से एक दिन पहले तक वोट बनते रहे हैं। करण दलाल साहब की कमेटी की रिपोर्ट में सबकुछ है। नगर निगम चुनाव में भी हमने बैलेट पेपर से चुनाव करवाने की मांग की थी। अब तो वीवीपैट भी नहीं लगा रहे। जबकि यह सुप्रीम कोर्ट की गाइड लाइंस हैं। ईवीएम सुरक्षित नहीं है। ट्रंप ने भी पेपर बैलेट का समर्थन किया है। भाजपा और कांग्रेस के वोट शेयर में मामूली सा अंतर था। उन्हें 39.94 फीसदी वोट मिले, जबकि हमें 39.09 फीसदी। हरियाणा में सरकार उसी की बनती है, जो पोस्टल बैलेट में जीतता है। पोस्टल बैलेट में हम 90 सीटों में से 76 जीते थे। एक बात तय है कि किसी भी इलेक्ट्रानिक गैजेट में छेड़छाड़ की जा सकती है। यहां से बैठे-बैठे जब अंतरिक्ष में जाने वाले राकेट को नियंत्रित किया जा सकता है तो ईवीएम को क्यों नहीं। जब इतने सवाल उठ रहे हैं तो एक बार बैलेट पेपर से चुनाव करवा लो। सुप्रीम कोर्ट ने भी पिछले दिनों भी एक ऑब्जरवेंशन दी थी कि ईवीएम से डाटा डिलीट नहीं करना चाहिए था। सैलजा तो सीनियर लीडर हैं। बाकी सबको पता है कि किसने क्या किया है। उस दौरान कौन क्या बयान दे रहा था। कौन किससे मिला था, उस बात को लेकर मैं कोई टिप्पणी नहीं करना चाहता। इन लोगों को न तो इतिहास का पता है और न ही आज का।

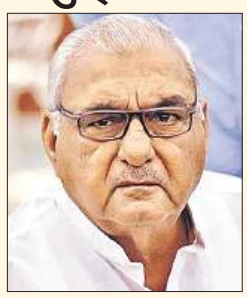

मोदी से शिष्टाचार मुलाकात होती रहती है

मोदी और मैं दस साल तक मुख्यमंत्री रहे हैं। साल में दो बार मुख्यमंत्रियों का सम्मेलन होता था, तो अल्फाबेट्स के हिसाब से मैं और मोदी अगल-बगल ही बैठते रहे हैं। समारोह में तो शिष्टाचार मुलाकात होती रहती हैं। अब तो राजनीति बदल गई है। मैं पिछले दिनों सुखबीर बादल की बेटी की शादी में गया था। तो इसका कुछ भी मतलब निकालोगे। मेरे पिता ने प्रकाश सिंह बादल और बलराम जाखड़ को कांग्रेस का टिकट दिलवाया था। मेरे पास भी यह वीडियो आया था। मोदी ने मुझसे नहीं बल्कि मेरे साथ खड़े अश्विनी कुमार से कहा था। अश्विनी कुमार ने ही पूछा था कि मैं आपसे मिलना चाहता हूं तो मोदी ने कहा आइए कभी भी। समारोह में अमित शाह भी मिलने आए थे। ये लोग तो बचपने वाली बात करते हैं।

राहुल संगठन पर ग्रास रूट स्तर पर काम कर रहे

ऐसा नहीं है। कांग्रेस नेशनल पार्टी। इसकी मौजूगदी हर प्रदेश में हैं। संगठन भी हमारा जल्द तैयार होगा। कोई भी पार्टी हो संगठन के नहीं होने से नुकसान तो होगा। राहुल संगठन पर ग्रास रूट स्तर पर काम कर रहे हैं।

जेलेंस्की ने अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को दिया झटका

» यूक्रेन-रूस युद्ध समझौता खटाई में पड़ा, यूरोप का समर्थन

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

वाशिंगटन। अमेरिका में राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की के बीच तीखी बहस के बाद यूक्रेनी राष्ट्रपति द्वारा अपने देश के आत्मसम्मान में किए गए फैसले का सबने स्वागत किया है। सोशल मीडिया पर उनकी जमकर तारीफ हुई है। वहीं कुछ भारत के पीएम को भी संदेश दे रहें हैं उन्हें जेलेंस्की से सीखाना चाहिए और देश के अहित में जो भी फैसले अमेरिका ले रहा है उसे नहीं मानना चाहिए। उधर जेलेंस्की के साथ पूरा यूरोपीय यूनियन खड़ा हो गया है। आपकों बता दें ओवल ऑफिस में जो हुआ, उसे दुनिया ने देखा। नोंक-झोंक के बाद से शांति समझौता खटाई में पड़ गया है।

संभलकर तोड़ें टांग, नहीं तो फंस जाएंगी जान

» कौओं की मौत, बर्ड फ्लू की पुष्टि

» पूरे देश में तेजी से फैल रहा है बर्ड फ्लू!

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। जहानाबाद में हुई कई कौओं की मौत का कारण बर्ड फ्लू (एवियन इन्फ्लूएंजा एच5एन1) पाया गया है। जिला प्रशासन ने इसकी पुष्टि की है। एडिशनल डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट (एडीएम) बृजेश कुमार ने बताया कि कोलकाता स्थित आरडीडीएल संस्थान की जांच रिपोर्ट में मृत कौओं में एच5एन1 वायरस की पुष्टि हुई है।

वहीं संक्रमण की पुष्टि होने के बाद जहानाबाद जिला प्रशासन ने सफाई अभियान तेज कर दिया है। प्रभावित इलाकों में सोडियम हाइपोक्लोराइट का छिड़काव किया जा रहा है ताकि वायरस का फैलाव रोका जा सके। पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग के सचिव ने भी पुष्टि की है कि मृत कौओं में बर्ड फ्लू पाया गया है।

सैंपल इकट्ठा होंगे

पशुपालन विभाग ने तीन किलोमीटर के दायरे में आने वाले पोल्ट्री फार्मों से नमूने इकट्ठा करने शुरू कर दिए हैं। इन नमूनों को आगे की जांच के लिए पटना भेजा जाएगा, ताकि यह पता चल सके कि घरेलू मुर्गियों में भी संक्रमण फैला है या नहीं।

मारे जाएंगे पक्षी

एच5एन1 वायरस की पुष्टि के बाद प्रशासन हाई एलर्ट पर चला गया है और लोगों को भी सतर्क रहने और बीमार या मृत पक्षियों से दूर रहने की सलाह दी है। पोल्ट्री फार्मों में सफाई का काम शुरू कर दिया गया है। यदि और मामले सामने आते हैं, तो संक्रमण को रोकने के लिए पक्षियों को मारने का फैसला लिया जा सकता है।

प्रशासन एलर्ट

प्रशासन ने लोगों को याद दिलाया है कि बर्ड फ्लू एक संक्रामक वायरस है, जो पक्षियों से इंसानों तक फैल सकता है। सरकार पोल्ट्री फार्मों की निगरानी बढ़ा रही है और पूरे क्षेत्र में सतर्कता बरती जा रही है। अधिकारियों ने आश्वासन दिया है कि संक्रमण को रोकने और लोगों के स्वास्थ्य की सुरक्षा के लिए सभी जरूरी कदम उठाए जा रहे हैं। बर्ड फ्लू के प्रकोप से

बारिश की भेंट चढ़ा मैच, ऑस्ट्रेलिया सेमीफाइनल में

» तीन में से एक मैच जीती कंगारू टीम

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लाहौर। अफगानिस्तान और ऑस्ट्रेलिया के बीच लाहौर में खेला गया मुकाबला बारिश की भेंट चढ़ गया और मैच बेनतीजा रहा। मैच दोबारा नहीं होने का फायदा ऑस्ट्रेलियाई टीम को हुआ जिसने सेमीफाइनल में जगह बना ली है। अफगानिस्तान की उम्मीद धूमिल हो गई हैं, लेकिन उसका सफर आधिकारिक रूप से अभी खत्म नहीं हुआ है।

अफगानिस्तान की नजरें अब दक्षिण अफ्रीका और इंग्लैंड के बीच शनिवार को होने वाले मुकाबले पर टिकी होंगी। दक्षिण अफ्रीका की हार अफगानिस्तान के लिए दरवाजे खोल सकती है। भारत और न्यूजीलैंड के बाद ऑस्ट्रेलिया चैंपियंस ट्रॉफी के सेमीफाइनल में पहुंचने वाली तीसरी टीम रही। ऑस्ट्रेलिया ने इंग्लैंड को अपने पहले मैच में हराया था। इसके बाद दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ उसका दूसरा मुकाबला बारिश की भेंट चढ़ा था और अब अफगानिस्तान के खिलाफ मैच में पूरा नहीं हो सका। ऑस्ट्रेलिया ने इस तरह ग्रुप चरण में तीन में से एक मैच जीता और चार अंक लेकर सेमीफाइनल में जगह सुनिश्चित की। दक्षिण अफ्रीका और अफगानिस्तान के अब तीन-तीन अंक है और यह दोनों टीमें तालिका में क्रमश: दूसरे और तीसरे स्थान पर हैं। अगर दक्षिण अफ्रीका इंग्लैंड के खिलाफ जीत दर्ज करने में सफल रही तो पांच अंक लेकर ग्रुप बी में शीर्ष पर रहते हुए सेमीफाइनल में पहुंच जाएगी।

अफगानिस्तान को चमत्कार की आस

अफगानिस्तान की नजरें अब दक्षिण अफ्रीका और इंग्लैंड के बीच शनिवार को होने वाले मुकाबले पर टिकी होंगी। दक्षिण अफ्रीका की हार अफगानिस्तान के लिए दरवाजे खोल सकती है। इस मैच में इंग्लैंड अगर पहले बल्लेबाजी करने उतरता है तो दक्षिण अफ्रीका को कम से कम 207 रनों से हराना होगा। वहीं, जोस बटलर के नेतृत्व वाली टीम अगर दूसरी पारी में बल्लेबाजी करने उतरती है तो उन्हें 11.1 ओवर के अंदर लक्ष्य हासिल करना होगा।

अफगानिस्तान का नेट रन रेट बन सकता है मुसीबत

अगर दक्षिण अफ्रीका को इंग्लैंड के खिलाफ बड़ी हार का सामना करना पड़ा और उसका नेट रन रेट अफगानिस्तान से कम रहा तो अफगानिस्तान आगे बढ़ सकती है। हालांकि, दक्षिण अफ्रीका का नेट रन रेट अफगानिस्तान से काफी बेहतर है और कोई चमत्कार ही अब अफगानिस्तान को सेमीफाइनल का टिकट दिला सकता है।

एआई के जरिये सीएम नीतीश को घेरेंगे तेजस्वी

» अभी से सियायी दलों में शुरू हो गया वार-पलटवार

» बिहार चुनाव में एआई के साथ उतरेगा राजद

» मीम्स, कार्टून और प्रचार में एआई का उपयोग करेंगे सभी दल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। बिहार का में विपक्षी राष्ट्रीय जनता दल हर पार्टी से एक कदम आगे चल रहा है। राजद ने सीएम नीतीश कुमार पर हमले के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की मदद लेनी शुरू कर दी है। बता दें पिछला विधानसभा चुनाव कोरोना काल की पहली दस्तक के समय हुआ था। कोरोना के कारण लोग सहमे थे और चुनावी सभाओं पर रोक या नियंत्रण की स्थिति थी। उस समय मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की पार्टी जनता दल यूनाईटेड ने वर्चुअल प्रचार-रैलियों के मामले में सहयोगी भारतीय जनता पार्टी को भी पीछे छोड़ दिया था।

जदयू ने बाकायदा एक नियंत्रण कक्ष बनाकर इसपर काम किया था। आधुनिक तकनीकों का उपयोग बिहार के राजनीतिक दल कर सकते हैं, यह पिछले विधानसभा चुनाव में सामने आया था। जदयू ने पिछले चुनाव में जेडीयू आनलाइन का प्रोजेक्ट लाया था। जदयू के मौजूदा कार्यकारी राष्ट्रीय अध्यक्ष संजय झा ने उस समय इसकी कमान संभाली थी। हर जिले के कार्यकर्ताओं का मोबाइल नंबर लेकर उन्हें इसके जरिए जोड़ा गया था, ताकि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का वर्चुअल संदेश चुनाव से पहले पार्टी में हर स्तर तक पहुंच जाए। यह प्रयोग काफी हद तक सफल रहा था। वर्चुअल रैली तो भाजपा ने भी की थी, लेकिन उसका प्रयोग बिहार के स्तर से नहीं हुआ था। इस बार, विधानसभा चुनाव आने के पहले आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का जमाना आ चुका है।

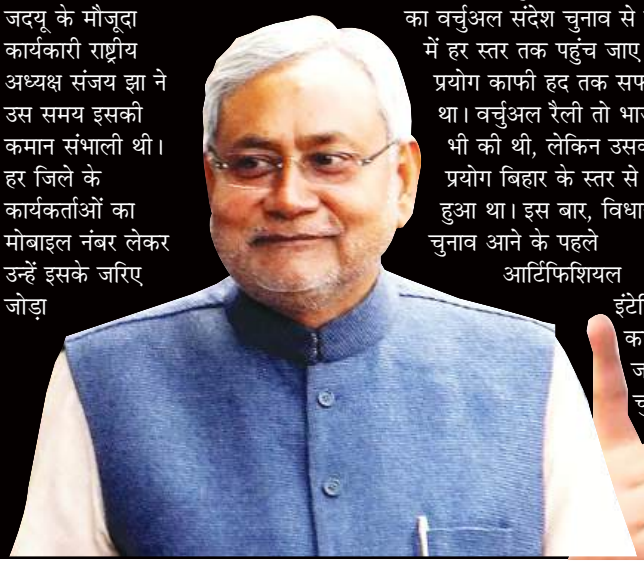

राजद का बनाया एआई कार्टून तेजस्वी ने किया जारी

राजद विपक्ष में है। विपक्ष का तो सबसे मजबूत दल है ही, एक पार्टी के तौर पर भी मजबूत स्थिति में है। लालू प्रसाद यादव की यह पार्टी अब तेजस्वी यादव के जमाने में नए तरीके से चलने की तैयारी कर चुकी है। राजद ने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार पर जुबानी हमले तो जारी रखे ही हैं, ऐसे हमलों के लिए एआई का भी प्रयोग शुरू कर दिया है। तेजस्वी यादव ने शनिवार की सुबह सीएम नीतीश कुमार को लेकर अपनी बात लिखते हुए एआई पर आधारित एक तस्वीर जारी की है। चुटीले व्यंग्य के साथ ऐसी तस्वीरों का प्रयोग अब बहुत जल्द राजद बड़े स्तर पर करेगा। राजद या जदयू के साथ ही भाजपा की वेबसाइट भले ही लगातार अपडेट नहीं होती हो या उसके जरिए कार्यकर्ताओं तक पहुंचना मुश्किल बना रहे, लेकिन नए प्रयोग की ओर ध्यान सभी का है। राजद का यह नया प्रयोग इसलिए भी चर्चा में है, क्योंकि इसमें कार्टून का पुट है।

क्या मुंह लेकर जनता के बीच जाएंगे : प्रभाकर मिश्रा

तेजस्वी यादव के बयान पर बीजेपी प्रवक्ता प्रभाकर मिश्रा ने पलटवार किया है। उन्होंने कहा कि तेजस्वी यादव की मानसिक स्थिति इन दिनों गड़बड़ा गई है। बिहार में स्थापित सुशासन और कानून का राज उन्हें अपच किए हुए है। जंगलराज के शूरवीरों का कुछ चल नहीं रहा है इसलिए उनकी बेचैन आत्माएं भटक रही हैं. 20 वर्षों के नीतीश राज में बिहार में हुई तरक्की तेजस्वी यादव को दिख नहीं रही है. युवाओं की किस टोली ने जंगलराज को फिर से स्थापित करने की ठानी है, जरा तेजस्वी खुलकर बताएं। प्रभाकर मिश्रा ने आगे कहा कि हालात तो ये हैं कि राज्य की जनता मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के विकास कार्यों से अति प्रसन्न है और विकास की तेज रफ्तार को ही चाहती है. जनता की यही बात तेजस्वी यादव को परेशान किए हुए है कि विधानसभा चुनाव में क्या मुंह लेकर जनता के बीच जाएंगे।

जर्जर, बीमार और थकी हुई अविश्वसनीय नीतीश सरकार को हटाएंगे : तेजस्वी

बिहार विधानसभा में विपक्ष के नेता तेजस्वी यादव ने शनिवार को जो एआई आधारित कार्टून जारी किया, वह आप ऊपर देख चुके हैं। इस कार्टून के साथ तेजस्वी ने अपना संदेश भी लिखा है-बिहार में साल पुरानी गाड़ी चलाने की अनुमति नहीं है क्योंकि वो ज़्यादा धुँआ फेंकती है, प्रदूषण बढ़ाती, जनता के लिए हानिकारक है तो फिर की साल पुरानी जोड़-तोड़, पलटा-पलटी वाली खटारा सरकार क्यों चलेगी? वर्षों की नीतीश सरकार ने विगत साल में बिहार के हर गली-हर टोला-हर गाँव में गरीबी, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, अपराध और पलायन रूपी भयंकर प्रदूषण फैला दिया है। नीतीश-भाजपा सरकार ने वर्षों में दो पीढ़ियों का जीवन बर्बाद कर दिया। अब यह सरकार बिहारवासियों पर बोझ बन चुकी है। अब इसे बदलना अति आवश्यक है। बिहार के युवाओं ने ठान लिया है कि अब साल पुरानी खटारा, जर्जर, बीमार और थकी हुई अविश्वसनीय नीतीश-सरकार को हटा कर एक नई सोच, नए विज़न, नए जोश और नयी दिशा वाली युवा एवं नौकरी-रोजगार व विकास कार्यों को समर्पित विश्वसनीय जुनूनी सरकार को लाना है तथा नया #बिहार बनाना है।

स्वास्थ्य बुनियादी ढांचे पर पेश की गई सीएजी रिपोर्ट पर हंगामा

» कांग्रेस व भाजपा ने केजरीवाल पर कसा तंज

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। दिल्ली के स्वास्थ्य मंत्री पंकज कुमार सिंह ने विधानसभा में स्वास्थ्य बुनियादी ढांचे पर पेश की गई सीएजी रिपोर्ट के बाद तत्कालीन आम आदमी पार्टी सरकार पर कई घोटालों में शामिल होने का आरोप लगाया। इसके बाद से दिल्ली की सियासत गरमा गई। कांग्रेस व सत्तारुढ़ भाजपा ने आप को घेर लिया है। स्वास्थ्य मंत्री सिंह ने कहा कि आप सरकार ने केवल घोटाले किए हैं, यहां तक कि कोविड-19 महामारी के दौरान भी घोटाला किया।

लिहरजा घोटालों करने वालों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी।इसके अलावा, अस्पतालों में दवाइयों और उपकरणों की कमी थी, और कई जगहों पर बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध नहीं थीं। रिपोर्ट में यह भी सामने आया कि कैट्स एम्बुलेंस आवश्यक उपकरणों के बिना चल रही थीं और रेडियोलॉजिकल सेवाओं का उपयोग अपर्याप्त था। सीएजी ने दिल्ली के स्वास्थ्य बुनियादी ढांचे में सुधार की आवश्यकता को रेखांकित किया है, ताकि बढ़ती जनसंख्या के लिए स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर किया जा सके।

स्वास्थ्य विभाग के भ्रष्टाचार का पर्दाफाश हुआ : देवेंद्र यादव

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष देवेंद्र यादव ने आप के स्वास्थ्य मॉडल की सच्चाई को सीएजी रिपोर्ट के हवाले से उजागर किया। उन्होंने कहा कि वर्ष 2016 से 2022 के बीच की सीएजी रिपोर्ट में दिल्ली के स्वास्थ्य विभाग की खामियों और भ्रष्टाचार का पर्दाफाश हुआ है। इस बारे में कांग्रेस बार-बार सवाल उठा रही थी। अब सच्चाई उजागर हो गई है। देवेंद्र यादव ने आरोप लगाया कि कोविड महामारी के दौरान केजरीवाल सरकार ने 787 करोड़ रुपये का बजट आवंटित किया था, लेकिन सिर्फ 582.84 करोड़ रुपये खर्च किए। स्वास्थ्य कर्मचारियों के वेतन और चिकित्सा आपूर्ति के लिए आवंटित रकम का भी उपयोग नहीं किया गया। केजरीवाल सरकार ने अस्पतालों में 32,000 नए बेड का लक्ष्य रखा था, लेकिन केवल 4.24 प्रतिशत यानी 1,357 नए बेड ही जोड़े गए। इससे मरीजों को इलाज के लिए अत्यधिक इंतजार करना पड़ा।

केजरीवाल के स्वास्थ्य मॉडल की पोल खोली : वीरेंद्र सचदेवा

प्रदेश भाजपा के अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने शुक्रवार को विधानसभा में पेश की गई सीएजी की दूसरी रिपोर्ट को लेकर अरविंद केजरीवाल और उनकी सरकार पर जोरदार हमला बोला। उन्होंने दावा किया कि इस रिपोर्ट ने केजरीवाल सरकार ने मोहल्ला क्लीनिक और अस्पतालों के नाम पर दिल्ली के लोगों को धोखा देने के मामले को साबित कर दिया। सचदेवा के अनुसार, वह पहले दिन से कह रहे थे कि केजरीवाल सरकार ने मोहल्ला क्लीनिक बनाने के बजाय अस्पतालों में नकली दवाइयां बांटी हैं और स्वास्थ्य सेवाओं के नाम पर दिल्ली को शर्मसार किया है। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि दिल्ली सरकार के 27 अस्पतालों में से 14 अस्पतालों में आईसीयू की सुविधा नहीं है, जबकि केजरीवाल ने हेल्थ क्रांति का दावा किया था। उन्होंने कहा कि सीएजी रिपोर्ट के बाद आगामी पांच साल भी केजरीवाल और उनकी पार्टी के लिए पिछले 10 सालों के भ्रष्टाचार का हिसाब देने के लिए कम पड़ेंगे। इसके साथ ही उन्होंने विपक्ष पर आरोप लगाया कि वह बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर की तस्वीर का बहाना बना कर अपने भ्रष्टाचार से ध्यान भटका रही हैं, लेकिन यह प्रयास कभी सफल नहीं होगा। सचदेवा ने कहा कि केजरीवाल सरकार को अब सीएजी रिपोर्ट के सामने अपने झूठ को छुपाने का कोई रास्ता नहीं बचा।

मकान की छत गिरने से एक ही परिवार के पांच सदस्यों की मौत

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चंडीगढ़। पंजाब के तरन तारन जिले में शनिवार तड़के एक मकान की छत गिरने से एक परिवार के पांच सदस्यों की मौत हो गई। पुलिस ने शनिवार को यह जानकारी दी। पुलिस ने बताया कि यह घटना तड़के करीब साढ़े चार बजे पंडोरी गोला गांव में हुई। पुलिस के अनुसार, मकान की स्थिति खराब थी और छत पर कुछ बेकार सामग्री रखी हुई थी जिसके वजन के कारण वह ढह गया।

घटना के बाद घायलों को अस्पताल ले जाया गया जहां उन्हें मृत घोषित कर दिया गया। मृतकों की पहचान गोबिंदा (40), उसकी पत्नी अमरजीत कौर (36), उनके तीन नाबालिग बच्चों गुरबाज सिंह (14), गुरलाल (17) बेटी एकम (15) के रूप में हुई।

आगरा में बस और ट्रक में टक्कर चार लोगों की मौत, 19 घायल

» आगरा-लखनऊ एक्सप्रेसवे पर हुआ दर्दनाक हादसा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। आगरा के फतेहाबाद क्षेत्र में आगरा-लखनऊ एक्सप्रेसवे पर एक दर्दनाक सड़क हादसे में बस और ट्रक में टक्कर होने से चार लोगों की मौत हो गई, जबकि 19 अन्य घायल हो गए। जानकारी के अनुसार, हादसा उस समय हुआ जब लखनऊ से आगरा जा रही बस ओवरटेक करते समय ट्रक से टकरा गई। हादसा शनिवार सुबह करीब 5:40 बजे हुआ, जिसमें चार यात्रियों की मौत हो गई।

थाना प्रभारी डीपी तिवारी ने जानकारी देते हुए बताया कि बस लखनऊ-आगरा एक्सप्रेसवे के 27 किलोमीटर के पास ओवरटेक करते समय नियंत्रण खो बैठी और एक ट्रक से टकरा गई। तिवारी ने आगे बताया, बस का बायां हिस्सा बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया और चार लोगों की मौके पर ही मौत हो गई। मृतकों की पहचान राजस्थान के जोधपुर निवासी 68 वर्षीय गोविंद लाल के रूप में हुई है। रमेश, जोधपुर, राजस्थान से 45 वर्षीय दीपक वर्मा, आगरा निवासी 40 वर्षीय; और मिर्जापुर के 40 वर्षीय बबलू की मौत हो गई। हादसे के बाद शवों को पोस्टमार्टम के लिए आगरा के एसएन मोर्चरी भेज दिया गया। हादसे में 19 लोग घायल हो गए, जिन्हें इलाज के लिए फतेहाबाद के संध्या अस्पताल ले जाया गया। घायलों में मुंबई की रहने वाली फल्गुनी (26) और देऊ परमार (53) के अलावा मुंबई की ही सोनिया शर्मा (34) और नीलू शर्मा (40) शामिल हैं। अतिरिक्त घायलों में गुड़गांव के 27 वर्षीय अपूर्व गुप्ता, आगरा की गर्विता शर्मा (25), अछनेरा के रामभजन (33), भदोही के रियाज अहमद (44), राजकोट की मनीषा (38), भावनगर की शिल्पा (37) और तुलसी (46), बिधूना के अजय चौहान, मुंबई की कोमल (23) और देवदास (32), मथुरा की हीरा देवी, राजकोट के चिराग (23) और सोनिया शर्मा (40) शामिल हैं।

हिमस्खलन पर कांग्रेस ने भाजपा सरकार को घेरा

मौसम विभाग की चेतावनी के बाद भी नहीं जागा आपदा प्रबंधन : धस्माना

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

देहरादून। प्रदेश कांग्रेस कमेटी ने चमोली जिले के माणा में हिमस्खलन की घटना की चिंता जताते हुए बर्फ में दबे श्रमिकों के सकुशल निकाले जाने की कामना की है। कांग्रेस ने आरोप लगाया कि मौसम विभाग की चेतावनी के बावजूद आपदा प्रबंधन सतर्क नहीं रहा। प्रदेश कांग्रेस उपाध्यक्ष सूर्यकांत धस्माना व महामंत्री नवीन जोशी ने आपदा प्रबंधन के सिस्टम पर सवाल खड़े किए।

कहा कि, मौसम विभाग ने तीन दिन पहले ही पर्वतीय क्षेत्रों में मौसम खराब रहने और भारी बर्फबारी की चेतावनी जारी की थी। इसके बाद भी प्रशासन व आपदा प्रबंधन ने श्रमिकों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाने के लिए कोई प्रयास किया किया। यह गंभीर चूक मामला है। इस लापरवाही पर जिम्मेदारी तय होनी चाहिए। उन्होंने प्रदेश सरकार से बर्फ में दबे श्रमिकों को निकालने के लिए युद्ध स्तर पर राहत व बचाव कार्य करने की मांग की है। प्रदेश का आपदा प्रबंधन तंत्र पूरी तरह से फेल है।

उत्तराखंड हिमस्खलन स्थल से 47 लोगों को निकाला गया, कुछ की हालत गंभीर

भारतीय सेना ने माना हिमस्खलन स्थल से और मजदूरों को सफलतापूर्वक बचाया है, जिससे निकाले गए लोगों की कुल संख्या 47 हो गई है। हालांकि, अधिकारियों ने बताया है कि बचाए गए कुछ लोगों की हालत गंभीर है, जिनमें से एक की हालत गंभीर है। शुक्रवार सुबह उत्तराखंड के चमोली जिले में माना गांव के पास सीमा सड़क संगठन (बीआरओ) के शिविर में भारी हिमस्खलन हुआ, जिसमें 55 मजदूर बर्फ के नीचे दब गए। खराब मौसम की स्थिति के बावजूद सेना द्वारा रात भर किए गए अथक प्रयासों के बाद नवीनतम बचाव कार्य किया गया। बचाए गए लोगों को तुरंत माना आर्मी कैंप ले जाया गया, जहां उन्हें तत्काल चिकित्सा सहायता और आगे का उपचार दिया जा रहा है।

सीएम धामी ने पीएम मोदी को जानकारी दी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी से बात की और चमोली के माना क्षेत्र में चल रहे बचाव अभियान की समीक्षा की, जहां हिमस्खलन के बाद कई श्रमिक फंसे हुए हैं। सीएम धामी ने आगे कहा कि मौसम की स्थिति में सुधार के साथ बचाव प्रयासों को तेज कर दिया गया है। उन्होंने अधिकारियों को गंभीर रूप से घायल श्रमिकों को एयरलिफ्ट करने का भी निर्देश दिया, जिन्हें पहले बचाया गया था और जिन्हें तत्काल चिकित्सा की आवश्यकता थी।

स्वामी 4 पीएम न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक संजय शर्मा द्वारा आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित एवं 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। महाराष्ट्र कार्यालय:- 2 जी, कृष्णा कुटीर सागरिका CHS जुहू तारा रोड जुहू- मुंबई- 400049। संपादक - संजय शर्मा, विधि सलाहकार: सत्यप्रकाश श्रीवास्तव, मोहम्मद हैदर, वित्तीय सलाहकार: संदीप बंसल, कार्टूनिस्ट: हसन जैदी, दूरभाष: 0522- 4078371 | Email: daily4pm@gmail.com | website: www.4pm.co.in | RNI-UPHIN/2015/62233 डाक पंजी. सं- SSP/LW/NP-495/2018-2020 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।